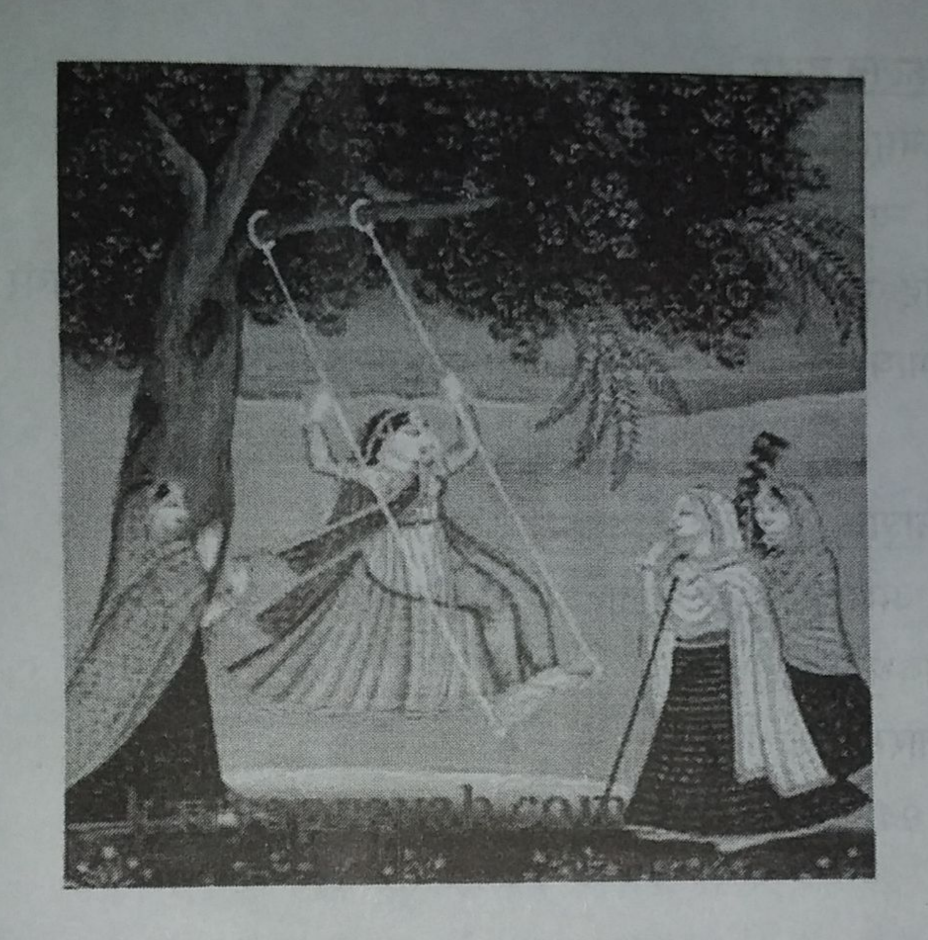
झूलन वहार - रक्षा बन्धन



प्रकाशक
श्री रामहर्षण-सेवा-संस्थान
परिक्रमा मार्ग, अयोध्या

झूलन वहार - रक्षा बन्धन



संकलनकर्त्ता

रसिकेश्वर दास

(न्यायमूर्ति आर.बी. दीक्षित)

प्रकाशक

श्री रामहर्षण-सेवा-संस्थान

परिक्रमा मार्ग, अयोध्या

झूलन वहार - रक्षा बन्धन

संकलन द्वारा

न्यायमूर्ति श्री आर.बी. दीक्षित (रसिकेश्वर दास)

पूर्व न्यायाधिपति, म.प्र. उच्च न्यायालय

सिद्दि-सदन, सी-10 कैलाशनगर, न्यू कलेक्ट्रेट रोड़ ग्वालियर

दूरभाष- 0751-2233046, मो. 9425526855

प्रकाशक

डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

(अवध बिहारी दास)

कैलारस, जिला मुरैना

मो. 9425750142

प्रकाशन स्थल (वितरण केन्द्र)

श्री राम हर्षण कुंज

परिक्रमा मार्ग, अयोध्या (उ.प्र.)

मो. 9415039921

न्यौछावर : 150/- रूपये

आमुख

श्रुति भगवती का निर्देश है- ''भाव ग्राह्य मनीडाख्यं, भावाभाव करं शिवम् ''(श्वेता. 5/14) एक मात्र श्रृद्धाभाव समन्वित, सुन्दर भावना से भावुक को प्राप्त होने योग्य परम ब्रह्म परमात्मा स्वयँ अपने स्वरूप में स्थित है। भगवान की स्वरूपा शक्ति उनसे अभिन्न है। वह ब्रह्म का आनंद विवर्धन करने हेतु तथा अधिकारी भक्तों के हृदय में प्रकट होकर रसोपासना के द्वारा रस स्वरूप ब्रह्म के आनंद की तथा प्रेमियों के आनंद की वर्धिका बनती है। युगल सरकार (श्री सीताराम जी महाराज) का झूलनोत्सव इसी वेद वर्णित प्रक्रिया का एक अंग हैं

श्री अवध धाम में प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल तीज से श्रावण पूर्णमासी तक झूलनोत्सव मनाया जाता है और इस उपलक्ष्य में देश-विदेश के हजारों भक्त अयोध्या जी में पधार कर श्री सीताराम जी के मधुर रसमय झूलन की छवि को अपने हृदय में बसा लेते हैं। मधुर रस वाले संतों के इस झूलनोत्सव की विशेषता यह है कि इसमें केवल सिद्ध वैष्णव संत एवं पूर्वाचार्यो द्वारा रचित पद ही गाये जाते हैं। ऐसे स्थानों में श्री सिद्ध-सदन रामहर्षण कुंज, अयोध्या की अपनी विशिष्ट पहचान है। इसका कारण यह है कि इन रसिक संतों की प्रेम-समाधी के कारण इन्हें प्रभु अपने रसमय रूप की सुन्दर झाँकी का दर्शन देते हैं। पुनः ऐसे संत अन्य रसिक भक्तों के कल्याणार्थ इसका चित्रण अपनी रचनाओं में करते हैं। अस्तु, इनके पदों के

लालित्य को सुनकर जहाँ एक ओर प्रभु श्री सीताराम जी प्रसन्न होते हैं, दूसरी ओर वे अनन्य प्रेमी भक्तों के हृदय में सहज ही वास करने लगते हैं। यही कारण है कि तपस्या के अभाव में आज की संगीतमय कथाऐं मात्र क्षणिक आनंद ही दे पाती हैं, स्थाई प्रभाव नहीं कर पातीं।

आधुनिक युग की व्यस्तता के कारण सभी भक्तों को श्री अवध धाम जाकर झूलन झाँकी का आनंद लेने का अवसर नहीं मिलता, अतः उनकी सुविधा के लिये रसिक वैष्णव संत एवं पूर्वाचार्यों के कुछ पद संकलित कर यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। इनका गायन अपने घर के पूजागृह में अथवा विशेष प्रेमी भक्तों के बीच किया जा सकता है। जिन्हें श्री राम भक्ति के विशेष साहित्य के अनुशीलन की आवश्यकता हो वे श्री रामहर्षण सेवा सँस्थान परिक्रमा मार्ग, अयोध्या से प्राप्त कर सकते हैं।

विनीत

रसिकेश्वर दास

प्रथम दिवस

(1)

विजुरी चमके घन घहराय।
पावस छटा अटा चढ़ि निरखत, जनक लली रघुराय।।
तरवर टपकत कोकिल कूंकत पपिहा, रटन नेह उमगाय।
रसिक अली तड़फत जव वादर, प्यारी पिय उर लपटाय।।

(2)

झूलन पधारो जी म्हारो राज।
कारिं पीरी घटा घन उमड़ि घुमड़ि आये विजुरी चमकति आज।।
सुनि बानी रससानी प्यारे, चले झुलन के काज।
कृपानिवास अली की जीवन, गरे लाग तजि लाज।।

(3)

प्यारी झूलन पधारो, झुकि आये वदरा।
सजिभूषण वसन, अखियन कजरा।।
मान कीजिये काहे को सुख लीजिये अली।
तुमतो परम सयानी, मिथिलेश की लली।।
देखो अवध ललन पिया, आगे ही खड़े।
रस वर्षे सुधा मुखी, जब पायनि परे।।

(4)

चले दोउ झूलन को हुलसान।
पिय प्यारी के नित्य झूलन हैं, नहि कछु काल प्रमान।।
पाय प्रदोष काल सखियन संग, गान तान झमकान।
पहुँचे झूलन कुंज सुहावन फूले विविध लतान।।
मोरन के यूथैं वहु विचरैं, नाचत पंख फुलान।
जात जात के पक्षी वोलें, भरि रहे शब्द दिशान।
चहुदिशि मणिमय महल विराजैं, मध्य विचित्र वितान।।
तामधि सुन्दर परै हिडोला, मौतिन के लहरान।
तापर बैठे दिय गलवाहीं, प्यारी पिय रसदान।।
नाना यंत्र लिये सखि गावति, लेत सुरीली तान।
दोउ दिशि ते सखि झुलवनि लागी, छवि लखि हिय उमड़ान।।
दोउ मिल झूलत हैं रसमाते, अग्र निरखि, वलि जान।
करि झूलन रस सिन्धु मगन दोऊ चले व्यारू स्थान।।

(5)

सावनी सुतीज मोदवीज 'रसरंग मणी'।
मनी कूट कुंज बीच फूले तरू सावनी।।
सावनी अवनि हरी, सावनी सरयू भरी।
सावनी मधुर झरी, मेघ वरसावनी।।
सावनी सुसारी, धारी भामिनी समूह गावैं।
सावनी सुराग नृत्य गति दरशावनी।।

सावनी पोशाक राम स्वामिनी सँवरि झूलैं।
सावनी सुझूलनी, स्नेह सरसावनी।।
वाग वृक्ष वेली झूलै संग की सहेली झूलै।
सरयू तरंगन सों झूलै, मोद मूलही।।
तुर्रा अनमोल झूलैं, कुण्डल सु लोल झूलैं।
अलक कपोल झूलैं दृग झूल फूलहीं।।
वेनी पीठ पर झूलैं, वेसरि अधर झूलैं।
झूलनी सुधर झूलैं, कर्णफूल डूलहीं।।
सवहीं झुलाय झूलें, झूलन में सीताराम।
योंही रसरंगमणी नैनन में झूलही।।
गावत हैं वेदचारी, ब्रह्मा त्रिपुरारि जाके।
नारद शारद शेष पार नहि पावही।।
करहि विविध जप तप योग योगीजन।
संयम समाधि करि करि जेहि ध्यावहीं।।
जाकी अनुशासन विरचि जर माया यह।
डहकि डहकि अंग जगहिं भुलावहीं।।
सोई प्यारे जानकी मनोहर सहित सिय।
झूलत नवल कुंज, सखिन झुलावही।।

(6)

जनकपुर लागत तीज सुहाई।
रंग रंगीली, अतिहि छवीली, सव मिलि झूलन आई।।
सावन मन भावन पिय प्यारो, अवनी सहज सुहाई।

पवन कुंज पुंज सुख बरसत, करषत मन वरषाई।।
कंचन खम्ब जड़ित डाढ़ी नग, विविध विचित्र बनाई।
रेशम डोरि कोरि वनि आई, चहुँ दिशि जलज जराई।।
लाले वाल लाल रंग भीनी, लालन लाल लड़ाई।
श्री प्रसाद प्यारी कर गहिकै, मंगल गाय चढ़ाई।।
चारूशिला पिय नैंन इशारन, झूलन प्रथम सिखाई।
झोका देत लेत सुख पिय को, मंद मंद मुसकाई।।
लाली पाग लाल शिर चुनरी, लाली अति मन भाई।
उमगे उरंग अनंग परस्पर, मैंन मल्हार जमाई।।
गावहिं समर रंग भरि भामिनि, कोकिल कंठ लजाई।
ठाकुर हमरे, राम मन मोहन, अंगन रूप लुनाई।।
ठकुराईन मिथिलेश लाड़िली, शील सनेह भलाई।
होड़ा होड़ी मच्यो है हिडोला, शोभा कहिन सिराहीं।।
अग्रअली प्रिय दम्पति झूलत, जनक लली रघुराई।।

(7)

राज रंग मानो चढ़ि नवल हिडोलना।
सावन की तीज आजु रीझि रीसि गावैं अलि,
तान रंग छावै मृदु मृदंग टकोरना।।
उवटि अन्हाय सोंधो अंजन फुलेल पान,
वसन सुरंग मणि भूषण सजोरना।
इत घन घटा घोर दामिनी दमके जोर,
चहुँ दिशि वोले मोर चातक चकोरना।।

विपिन प्रमोद शोभा देखि मन लोभा,
पावस द्रुमन गोभा, नव छवि छोरना।
रसिक अली के प्राण प्यारे रघुलाल सिया,
रमक झमक झूलैं हुलै चित चोरना।।

(8)

सिय सजि सावन तीज, सजन संग झूले हो।
सजि सुरंग पोशाक, सखी सम तूलै हो।।
गावहिं राग मलार श्रवण सुख मूलै हो।
कानन कल कमनीय, काम लखि भूलै हो।।
किसलय कोमल धनु, अशोक वन फूलैं हो।
विकसे कमल कल नीर, सरयु के कूलै हो।।
अलि सिय रसिक भुलाये सोऊ दिन दूलै हो।

(9)

दशरथ राजदुलारे सिया संग झूलें हो।
सरयू किनारे सुहाई कदम जूरि छहियाँ हो।
तहि तर झूलै हिड़ोरा दिये गलवँहियाँ हो।
एक ओर जनक किशोरी, सखिन संग सोहें हो।
एक ओर राघव बिहारी, लली मुख जोहें हो।
प्यारी की लट पिया जुलफन झूलत अरूझैं हो।
अचल रहे सखे श्याम कवहूँ नहि सरझै हो।

द्वितीय दिवस

(10)

देखो सुहावन श्रावण आयो रे,
हरि हरि सारी भूमि को लायो रे।
वड़ि वड़ि वूँदन मेघवा वर्षत,
गरज तरज विद्युत नभ दर्शत।
जल की धार वहाय मही पै,
सरित सरोवर सव उमड़ायो रे।
दादर मोर पपीहा बोलत,
कुहकत कोयल मधु को घोलत।
पवन वहत पुरवइया सजनी,
झूलन को शुचि समय सुहायो रे।
सिद्ध कुँअरि झूलन सजवाई,
तेहि पै सिय रामहि बैठाई।
सखियन सहित करि आरति हर्षण,
नृत्यगीत वर वाद्यहि छायो रे।

(11)

प्यारे झूलन पधारो अलि प्रेम में पगी।
लखि लखि श्रावण वहार, नन्ही वूंदन फुआर।

विनवहि सखि सर्वसवार, रोरे रंग में रंगी।
झूलन झाँकी तिहार, चाहें, नयनन निहार।
नृत्य गान सुख सम्हार, सेवैं भव से जगी।
मोरे मन में विचार, प्रीतम करि के सुप्यार।
हर्ष हिडोर में पधार, चोरें चित को ठगी।

(12)

देखो सखि आवत दिये गलवाहीं।
श्रावण सुख साने पिय प्यारी, झूलन हेतु उछाही।।
वसन विभूषण अंग अंग साजे, शोभा सिन्धु अथाही।
कोटि काम रति वारहि जापे, शत शशि आनग आही।।
सखि समूह विच राजहि रसिया रसकिनि संग सोहाही।
कोई सखि चमर छत्र कोऊ लीन्हे अतर पान कोउ पाही।।
कोऊ नृत्यत कोऊ गावत आवहि, कोऊ वर वाद्य वजाही।
हर्षण कुंज हिडोर अनूपम, चल पिय पद जेहि माही।।

(13)

झुलावति सिद्धि दोऊ को हिडोर।
जनक नन्दनी दशरथ नंदन, नव नागर नागरि रस वोर।।
मंद मुसुक मन हरत सलोने, मारि मारि वड़ दृगन की कोर।
झूलत प्रेम पगे रस वर्षत कहर करत सरहज चित चोर।।
श्याम गौर धन विद्युत झाँकी, झलमल झलमल झलकत जोर।

देखि देखि मैथिल नव नवला, सारी सरहज प्रेम विभोर।।
नृत्यगान वरवाद्य सुखद करि, रिझवहि नृपति किशोरि किशोर।
हर्षण श्यामा श्याम प्रहर्षत, नेह नगर को नेह अथोर।।

(14)

झूला झूलो मेरे ननदोई लला, झुकि झोंकि चला।
प्रेम पगे लै मोरी ननदहि, सुख शुषमा श्रृँगार भला।
विहंसत अधर अमिय सुखसागर, रसिकन नित्य पिलाय पला।
तिरछि तकनि चतुर चित चोरनि, देखहि दृग भरि दृगन कला।
झूलनि झमकनि झुकनि माधुरी, झक झोरनि सुख फलहि फला।
अरूझे युगल परस्पर निरखत, वितर आनन्द अनूप चला।
वने रहो नित नयनन तारे, श्रावण सदा भगाय बला।
हर्षण भाग कवी को वरणी, सेइहों सुख सनि चरण तला।

(15)

जनमन रंजन भवभय भंजन, झूलत चाये भाये हो।
सिय संग शोभित श्याम शत शशि, लजत मदत महान हैं।
अंग अंग छहरति छाय छिटकति, छवि सुखद सुख खानि है।
सिर अलक अतरनि भीजिकारी, कलित कुंचित राजती।
शत भांनु भहरत क्रीट मुकुटहु, खौर केशर भ्राजती।।
मसि विन्दु लाये। भाये हो ।।1।।
शुचि श्रवण कुण्डल लोल झाई, कल कपोलनि में परै।

जनु मीन मदनी अमिय सर में, कर किलोलहि हिय हरे।
दृग दोऊ कज्जल रेख रंजित, कान लों बड़रे अहा!
धनु काम भ्रकुटी सोह सुखमय, भक्त सुख प्रद सब कहा,
रस उपजाये। भाये हो ।। 2 ।।
हियहार कटि पै फवत किंकिण पगनि नूपूर अति लसै।
नख शीश भूषण वसन भूषित, जाय चित जहं तहँ फसै।
श्री सिद्धि महलनि श्वसुर पुर में, सारि सरहज रस वहीं,
झुकि झुकि झमकि झूलन झुलावहि, राम सिय सुख पावही।
आनंद छाये। भाये हो ।। 3 ।।
श्री सिद्धि वीणा लै करहि, निज स्वर सु पंचम प्रेम ते।
संगीत नृत्य सुवाद्य रसझर, पूरि आनंद तहँ रहयो।
सव भूल भानहि लखत श्यामहि, हर्ष लोचन फल लहयो।
जनम फल पाये। भाये हो ।। 4 ।।

रंगि राग ~~[illegible]~~ मलार सु मेघ गावति,
नाच्याहि आलिंगन नेम ते।

तृतीय दिवस

(16)

गुमानी, झूलन की रितु आई।
सावन सरिस सुहागिन के सुख, साजन संग सुहाई।।
प्यारे प्रीतम प्रेम नगर सों, नीकी वस्तु विसाई।
पावस पैठ काम कंचन सौ, कामिनी करत कमाई।।
सूम सुरेश भये अब दानी, पल-पल घन बरसाई।
संयत मास पपीहा वोलत, तिनकी प्यास मिटाई।।
कहत सिया सुन्दर वालम तुम दूर करो निठुराई।
कृपा निवास आस प्यारी की, मिलि रस रंग मचाई।।

(17)

चलो चलो हो किशोरी सुख लावन को,
पियो पियो हो पियारी रस श्रावण को ।।1।।
सखी सहेली सहचरी, अली मंजरी रानि,
षट प्रकार निमिकुल सुता, हमहि तुम्हहि सुख दानि।
देहि रसहि वषाई भरि भावन को ।। 2।।
श्रावण मन भावन लग्यो, उर महँ उठत उमंग, रिमि झिमि वर्ष वारि
घन, झूलहि तुम्हरे संग। सखिगण सवहि झुलाई छवि छावन को।। 3।।

नचत मोर वारिद निरखि, कुहकति कोयल जोर, नृत्य गान वर वाद्य
सुख, लहहि हमहूँ सुख वोर।
अलियन के मन भाई गुण गावन को।। 4।। हरति भूमि तृण संकुलित
सरयू लेत हिलोर, सखियाँ सिगरी सुखहि सनि, हर्षहि भाव विभोर।
नव नव आनंद अमाई, प्रिय पावन को ।। 5 ।।

(18)

झूलन बैठे झमकि दोऊ आय।
चितवनि मुसकनि मन की मोहाय।।
पिय प्यारी भुज अंश धरे पुनि, मधुरे मधुरे मुख नियराय।
कोटि सूर्य सम सहज प्रकाशित, शत शशि शीतल आनन लाय।
भहर भहर भल वसन विभूषण, छहर छहर छवि छाजत काय।
जगर जगर जिय ज्योति जगावत, प्रेम पंथ प्रेमिन दर्शाय।।
अलिगण निरखि सुखहि में सनि के, पूजहि प्रणय पुष्प वर्षाय।
युग युग जिये युगल वर जोरी, कहहि जयति जय, इक स्वर गाय।
हर्षण पान गंध श्रृंग अर्पी, नृत्यारति किय भावन भाय।।

(19)

रसिक दोऊ झूलत रसहि झरे।
सिद्धि सदन स्वच्छंद छहरि छवि, हरित हिडोर हरे।।
सुख सुषमा श्रृँगार महोदधि, लहरत सुखहि भरे।
नख शिख भूषण वसन सम्हारे, केशर तिलक करे।।

चितवनि चारू नयन कजरारे, चोरत चित्त अरे।
मन्द मन्द मुसकनि मन मोहत, धीरज धी न धरे।।
नृत्य गीत वर वाद्य ते अलियाँ, रिझवहि नेह खरे।
हर्षण लोभी लोचन लखि लखि, चाहत लगन गरे।। रसिक दोऊ-

(20)

झूलत कमला तीरे, रसिक रस वोरे।
दशरथ नन्दन जनक नन्दनी, पिय प्यारी सुख सीरे।।
उमड़ घुमड़ घन घहरत कारे, चपला चमक अधीरे।
पिऊ कह पपिहा कुहकत कोयल, नचत मोर वन भीरे।।
चहुँदिशि सुखद हरितमा छाई, सरिता वहुत बढ़ी रे।
झूलन कुंज सुखद सब कालहि, छिद्र न नेंक लही रे।।
सिद्धि कुँअरि सह सखिन झुलावत, नृत्य गीत सुख दो रे।
हर्षण सो सुख सुमिरि सुमिरि के, न्हात नयन के नीरे।।

(21)

मोहति मनहि हिडोर हलनिया।
श्याल भाम श्रीनिधि रघुवर की, प्रेम पगी सुख सनी सोहनिया।।
मुसुक मुसुक वतरात परस्पर, अरूझि रहे दोऊ लाल लोभनिया।
हुलकनि पुलकनि झमकि झूलना, रसहि रसी मन मोद बढ़निया।।
अलिगन नृत्यहि गावहि मधुरे, वाद्य वजत गंधर्व लजनिया।

कोटि कोटि कंदर्प दर्प हर, मोहि रहे मन मधुर मोहनिया।।
भाभी ननद सिद्धि सिय देखहि, बैठि झरोखनि झाँकी झुलनिया।
हर्षण दोऊ हुलसि हिय हर्षहि, वर्णत छवि-गुण-प्रेम पुरनिया।।

(22)

राज कुँअर रस रूप निहार - अहो री।

मिथिला अवध नृपति के वारे, कोटि काम मदगार।। झुलत हिडोर दोऊ सुख साने, श्याम गौर सुख सार। प्रीति पुनीत परस्पर प्यारी, वरणि कहै को पार।। एक एक मन हरत मुसुकि के, चितवनि जादू डार। अरूझि रहे भुज अंश दिये दोऊ, करि कपोल एक कार।। देखि देखि हिय हर्षण हर्षहिं, सिद्धि सिया सुकुमार। युग युग जिअै कहैं एक साथहिं रहै भाम अरू सार।।

चतुर्थ दिवस

(23)

अव घन घमण्ड नभ छाये।
चलत पुरवाई सननन, चमचम चपला चमकाये।।
वज़त मृदंग गरज जल धर की, झिल्ली झनकाये।
मानो धुनि नूपुर की, मेंढक ताल बजाये।।
नटत मयूर थिरकिधरर ररर, तानु शिखंड फरकि फरर ररर,
राग मलार उचार चातक गण, कोकिल कल स्वर गाये।।
विपिन प्रमोद मदन मन लोभित, कुसमित लता ललित तरू शोभित,
निरखि ललन मन भाये।।
अली सिय रसिक, नवल ऋतु निरंखत,
उर उमंग दम्पति दिल करषत, सुख सरसरत,
वादर झुकि वरषत, पावस रहस रचाये।

(24)

चलो देखन जाऊँ री झूलत झुलना।
श्री सरयू तट कुंज मनोहर, कुसुम जहाँ वहु विधि फुलना।।
रघुनन्दन श्री जनकनन्दनी, लखि छवि रति मनसिज भुलना।
श्याम गौर वर वरण सरस अति, घन दामिन उपमा तुलना।।
नख शिख भूषण वसन सुहावन, अंग अंग ललित सुधरि खुलना।

'नवल प्रिया' छवि देखि मगन भई, लाज कानि गति सुधि कुलना।।

(25)

झूलन में आज सज धज के, युगल सरकार बैठे हैं।
अलिन मन मोहने मानो, सुछवि श्रृंगार बैठे हैं।
युगल मुख चन्द्र हेरन को, सभी आँखें चकोरी हैं।
परस्पर में प्रिया प्रियतम, वने गरहार बैठे हैं।।
मजे से झूलते झूला, कभी मचकी भी लेते हैं।
रसीली मैथिली संग में, रसिक सरदार बैठे हैं।
मधुर मुसकाय सुनते हैं, सरिस संगीत सखियों के।
गुणों पर दाद भी देते, सजन दिलदार बैठे हैं।।
कृपामय नयन कोरों से, विहसि हँस हेरते दोनो।
लता रस काँति के हिय के, सकल सुख सार बैठे हैं।।

(26)

झूलति सिधि संग सिया हिंडोर।
प्रीति पगी सुख सनी रसहिं रस, भाभी ननद विभोर।।
दोउ सर्वांग् सुन्दरी अनुपम, रती रमा सव थोर।
नख शिख भूषण वसन सुसज्जित, अँगअँग अतिहि अँजोर।।
शारद शत शशि जित मुख आभा, अमृतमय रस बोर।
चितवनि मुसुकनि मधुर माधुरी, किमि कहि वाणी मौर।।
नृत्य गीत वर वाद्य ते रिझवहि, अलिगन हृदय हिलोर।

हर्षण दोउ की झमकि झुलनिया, सखियन के चित चोर।।

(27)

झूलति सिया सखिन के संग।
अजिर कदम की डार हिडोरा, सुखप्रद परयो सुढंग।।
चन्द्रकलादि अली वहु झूलैं, झमकि झमकि झुकि अंग।
निज निज झूलन की गति देखी, मन महँ वढ़त उमंग।।
मेघ मलार श्रावणी गावहिं पंचम स्वर एक संग।
वजत सितार सारंगी मजीरा, मुरली मुरज मृदंग।।
नृत्य नृत्य भल भाव प्रदर्शहिं, आनंद वर्धि अभंग।
हर्षण वर्षि सुमन सुर रवनी, रँगहि सिया के रंग।।

(28)

झूलै नवल हिडोले, पिय-प्यारे संग वनि ठनि श्यामा।
रतन जड़ित अति रूचिर हिडौला तामैं, रचना अनेक द्रुम सावन के बीच,
बाजत मृदंग आदि, गावत समूह-सखि, कोटि काम रहत कामा।।
शीतल सुगन्ध मन्द, वायु के प्रसंग तहां, घेरि घेरि आवत वलाहक के वृन्द।
नान्हि, नान्हि बुदियन वरिसन के समै छवि, अति शोभित सिय रामा।।
शीश को नवाय ईश को मनाइ के मुनीश,
वार वार विनय करत कर जोरि जोरि,

नृपति किशोर व किशोरी जू आनंद रहैं,
यह हमार मन कामा।

(29)

लिये झूलै छवीले सुघर धनिया।
घुंघट वीच अनौखी चितवनि, वदन सरोज कसे तनिया।।
मन्द हँसनि मुख चन्द सुधारस, जनक लली रघुकुल मनिया।
शील मणी नव रंग रँगीली, जोरी वनी सुखद धनिया।।

(30)

हिडोले झूलत सिय महरानी
श्रुति कीरति, उर्मिला, माण्डवी, चारूशिला गुणखानी।।
रच्यो हिडोरा नाम लिवावति, चतुर सखी मुसुकानी
सियाजू सकुचि रही नहि वोलत, अग्रअली मनमानी।।

पंचम दिवस

(31)

गगन रहे मेडराय वदरवा।
कारे कारे ओनइ ओनइ के, उमडि घुमडि घहराय।।
गरजि तरजि वहु विजुरी लपकै, आँख कान भय खाय।
वर्षत वारि मूसली धारी, सरित उमगि उमडाय।।
पावस राज महत महि छायो, प्रबल प्रताप दिखाय।
मैंढ़क मोर शोर चहुँ ओरी, वजत वधाव जनाय।।
हरित भूमि पत्नी जनु तेहि की, भई सुखी रस पाय।
विविध अन्न संतति कहँ प्रगटी, हर्ष न हृदय समाय।।

(32)

अरूझि करैं मम नयन स्वामिनी।
पिय प्यारी की झूलन झाँकी, झोंका चहै सुख दैंन ।।
श्रावण सुख सरसावन लखि के, चित्त धरत नहि चैन।
पपिहा पिउ पिउ वोल सिखावत, सेउ पिहहि दिन रैन।।
कोकिल, कुहु कुहु कहि सिखवत, सुनहु मधुर मृदु वैन।
मेघ मलार अलापहु प्यारी, प्यारे सह सुख ऐन।।
समय गये पुनि समय न ऐ हैं, सोचहु बुधि की पैन।
अलियन अरज हर्ष हिय धरि के, प्रेरहु पिय जित मैन।।

(33)

रसिया राम हिडोर झूलै सिय के संग।
चन्द्रकला सिय ओर झुलावैं, चारूशिला पिय ओर, गहि गहि डोर उमंग।।
हेमा क्षेमा मदन मंजरी, सखि सुभगा सुख ढौर, लक्ष्मणा व्हैं दंग।।
पदम गंधिनी वर आरोहा, नृत्यगान रस वोर,वजत वाद्य वहु रंग।।
झमकि झमकि झूलन दोउ झूलैं, झूलन झाँकी जोर, बढ़वत प्रेम तंरग।।
चितवनि मुसुकनि पर्श परस्पर, अलियन को चित चोर, पुलकत अंगन अंग।।
नील पीत पट फहरनि भावति, माल टुटनि झक झोर, झूलन झुकनि अभंग।।
हर्षण श्यामा श्याम सुशोभा, देत भवहि ते छोर, लाजत रती अनंग।।

(34)

आज प्रमोद विपिन सरयू तट, पिय प्यारी दोऊ झुलत हिडोर।
पावस ऋतु प्रिय परम सुहाई, रिमझिम वर्षे मेह नेराई,
कुहू कुहू कोयल कल कुहुकति, नृत्यहि नव नव वन वहु मोर।।
प्रकृति प्रभा मुनियन मन मोहै, युगल सेव हित सुन्दर सो है,
मधुमय मधुर कदम्ब की डारी, जहुँ शुचि सरयू लेत हिलोर।।
झुकि झुकि श्यामा श्याम सुहावैं, परसत लहर महा सुख पावैं,
फहरत पट घन विद्युत्त आभा, रसमय रसिकन के चित चोर।।

मंद मंद मुसुकत मन हारे, शत शत काम विमोहन वारे,
चितय परस्पर दै गल वाहीं, रसहिं रसे राजत रस वोर।।
अलिगन मेघ मलारहिं गावैं, नृत्यकला करि भाव भुलावैं,
रिझवहिं प्यारी प्रीतम रसि रसि, लखि लखि जड चेतन्य विभोर।।
गगन विमान पुष्प सुर वर्षत, जय जय कहत राम रस कर्षत,
नचहिं देव रमनी नभ उपर, उर भरि सेवहिं युगल किशोर।।
आनंद उमड़ि चहुँ दिशि छायो, रस ही रस एक रहो अमायो,
सीताराम परम परमारथ, हर्षण उर विच भयो अँजारे।

(35)

सखि श्यामा श्याम झमकि झुकि झूलैं।
शीतल सुखद वहत वर वायू, रिमझिम बूंद अतूलैं।।
हरित हरित दोउ वसन विभूषण, हरित सु सरयू कूलैं।
मन्द मन्द मुसकानि मजे की, नयन शयन सखि फूलैं।।
मेघ मलार मुरलि महँ गावत, लेत सवहि विनु भूलैं।
आ आ आ आ अली अलापैं, नृत्यति अब सुधि भूलैं।।
वीणा झाँझ मृदंग वजावहि, आनन्द वढत अतूलै।
लखि लखि देव सुमन शुचिवर्षत, हर्षण विसरत शूलैं।।

(36)

हिडोरे झूलत सीताराम।
श्याम गौर अभिराम मनोहर, रति पति के चित चोरे।।
नीलपीत वर वसन लसत तन, उठत सुगन्ध हिलोरे।
सहचरि हरषि झुलावति गावति, छवि निरखत तृण तोरे।।
मन्द मन्द मुसकात छबीलो, रमकत थोरे थोरे।
अति सुकुमारी अग्र की स्वामिनि, डरपि गहति पट छोरे।।

(37)

देखो राम बने जनु सावना। सिया लगि रँग बढ़ाबना।
सियवर की मोतिन की माला,सो बगपांति लजावना।
इन्द्र धनुष सिन्दूर सिया को, घन रस को बरसावना।।
पछिलो पवन सुसन्त विचारो, श्याम घटा प्रगटावना।
रवि बिनु कवि बुध मिल के लागे, रस की झरी लगावना।।
सियजू उत्तर दिशि की दामिनि, राम स्वरूप लखावना।
चमकि झमकि सो निज दांशन के, अन्तर जोति जगावना।।
ब्रह्मदेव हूँ यह सावन को, करत निरन्तर ध्यावना।
सियाराम जू जन्म जन्म की, जिय की जरनि मिटावना।।

षष्टम दिवस

(38)

झूलन की ऋतु आई अलि मोरी,
श्रावण सुखद सुहावन भावन, हरित भूमिका आई।।
झूलन कुंज हिडोर सजावहु, सुखप्रद सहज सुहाई।
सुनि वर विनय चले ललि लालन, झूलहि उर उमगाई।।
नयन कृतार्थ करहिं सब सजनी, झुकि झुकि झमकि झुलाई।
चन्द्रकला के वचन सुधा सम, सुनत सखी सुख पाई।।
पहुचि हिडोर कुंज मन मोदित, झूला दीन्ह सजाई।
हर्षण हर्षि सियहि सब सख्यिाँ, हिय की बात बताई।।

(39)

चले दोउ झूलन को पिय प्यारि।
सुख सह भवन सखिन सँग सौहत, द्वै शशि नखत मझारि।।
दै गलवाँह मन्द मुसकावत, चोरत चित्त निहारि।
शोणित अधर पान पुनि पाये, प्रेमिन प्रेम मझारि।।
कल कपोल कुण्डल कर केली, यथा मीन सर वारि।
अलकैं ललित अतर की वोरी, कारी अति गमुआरि।।
कीट चन्द्रिका सटि मन मोहत, मुख माधुरि हिय हारि।
गति गयंद कर कमल फिरावत, हर्षण जन सुख कारि।।

(40)

आज युगलवर झूलत फूले फूले।
श्यामा श्याम मधुर रस वर्षत, श्री सरयू के कूले
पुष्पित कदम पुष्पमय डरिया, पुष्प हिडोर अतूले।
पुष्पन मुकुट चन्द्रिका, भूषण पुष्प अमूले।।
पुष्पन हार लुभत मन मधुकर, पुष्पहि पहिरि दुकूले।
पुष्प मई सब सखी सुहावैं, पुहुपहि पुहुमि अधूले।।
माधुरि मुसुकनि पुष्प विखेरत, रस रसिया झुकि झूले।
सुर तरू सुमन सुरहु झरि लाखत, जय कहि हर्षण भूले।।

(41)

झुकि झुकि झमकि झुलनिया, लखो श्याम श्यामा की।
आवत जात अवनि अरू उपर, दम दम दम दमकनिया।।
श्याम गौर मधुमय मन मोहति, छवि छहरत छन छनिया।
अनुपम अकथ अगाध भरी रस, सुरसरि शत सुख खनिया।।
कोटि काम छवि लाजति छायहिं, शशि शत अधिक सोहनिया।
श्रावण साज सवहिं सुख सरसनि, हर्षण हिय हर्षनिया।।

(42)

झमकि झुकि झूलत झोको देत।
पिय प्यारी दोउ सुभग सलोने, श्रावण सुख सुठि लेत।।

नमि नमि जात कदम की डरिया, झरत पुष्प शुचि खेत।
घन दामिनि द्युति दम दम दमकति, कनक हिडोर अजेत।।
दिये परस्पर भरि भुज अंसहिं, रसिया युग कुलकेत।
सखि समूह सेवा सुख सरसहिं, गावहि कजली चेत।।
तरूवर लता विहँग मृग जीवहू, सुनि सुख शान्ति उपेत।
राम सिया रसमय लखि हर्षण, को न वसै रस खेत।।

(43)

प्रीतम प्यारी प्रेम पगे हैं, रसि रसि पीवत अधरवा रे।
दोउ दोउ को भुज फाँसि लिये हैं, तजन शंक जनु वसहि किये हैं,
हिय हिय ओरे जियरवा रे।।
नयनन नयन मिलाय हँसन ते, भाव भंगिमा बने न मन ते,
इक इक प्राणन पियरवा रे।।
झुलत हिडोर छहर छवि पुंजन, करति प्रकाश परम प्रिय कुंजन,
सखि सब सोहें, नियरवा रे।।
नवल नवल अनुराग भरी सब, झुलवहि लाल लली करि अनुभव,
भूलीं भव को भमरवा रे।।
नृत्यहिं नूपुर छुप छुप वाजत, मेघ मलार अलाप सुहावत,
मोहत मनहि मधुरवा रे।।
वीणा वेण स्वरन झनकारहि, वाद्यकला पिय को हिय हारहिं,
सखिगन सोहें सुधरवा रे।।

प्रकृति छटा नहि वरणि सिरावति, सेवति युगल सुखहि सरसावति,
हर्षण हर्षे हियरवा रे।।

(44)

रसिया ना मानें सजनी, झूलन मन न अघाय।
सोवति सजनी अपने भवन में, औचक मोहि जगाय।।
वन प्रमोद कुंजन कुंजन में, नित उठि झूलत आय
ज्ञानाअलि सिय पिय संग झुलिहों, अभय निशान वजाय।।

सप्तम दिवस

(45)

तनिक मनहरनी चलू यहि ओर।
इत उनयी पुनीत सरयू तट, श्याम घटा घनघोर।।
महाराज ठाढ़े मग जोहत, साजे नवल हिडोर।
दामिनि दमकि रमकि छावि छहरत, वोलत दादुर मोर।।
यों सुनि स्वामिनि बेगि सिधारीं, सजि तन सुरंग पटोर।
'शिवदयाल' दम्पति मिलि हर्षे, विहँसि चितै दृग कोर।।

(46)

दशरथ सुत अरू जनक नन्दिनी, चितवनि में चित चोरें री।
नान्हि नान्हि वुन्द पवन पुरवैया, वरसत थोरे थोरे री।।
हरि झरि भूमि घटा झुकि आई, सरजू लेत हिलोरे री।
उपवन वाग विंहगम वोले, दादुर मोर चकोरें री।।
हयदल पयदल गजदल रथदल, कोटि वने चहुँ ओरे री।
वाजत ताल मृदंग झाँझ डफ, शंखन की घन घोरे री।।
नागरि नाम लिवावै पिय को, सियजू हँसि मुख मोरे री।
अग्रदास हरि रूप निहारे, चरण कमल बलिहारैं री।।

(47)

नीकी लगै मोहि प्यारी, झुलावति पिय को हिडोर।
गहिकर कमल डोर रेशम की, अरूण अँगुलियाँ प्यारी।।
मधुरी मुसकनि पिय तन चितवनि, अहो हृदय हठि हारी।
लखि लखि वदन पिया को मोहति, सुख सुषुमा श्रृँगारी।।
नखशिख भूषण परम प्रकाशित, तन द्युति मनहु दिवारी।
चादर चोली सुभग साटिका, लजहिं कनक जरतारी।।
मधुर मधुर मुख मंडल श्रमकन पदम पत्र कण वारी।
हर्षण पेखि प्रेम बस प्यारो, गहि बहिंयाँ बैठारी।

(48)

झूलन झाँकी लखो लली लाल की।
शोभा सदन मधुर रस वर्षनि, भूषित मणि गण जाल की।।
चितवनि मुसुकनि मधुहिं विखेरी, मोहति मन सुख शाल की।
हर्षण हृदय हर्ष उपजावनि, झुलनि झुकनि चित चाल की।।

(59)

झूलत सजनी झूला वाँका समरिया।
सिया सहित सुकमार सोह सुठि, सुख सुषमा श्रृँगार अगरिया।
चंचल चित चोर चटकीलो, तकि तकि मारे मोकूँ नजरिया
मधुरी मुसुकनि मोहक मन की, लखि मोहे नागर नागरिया।

लुरनि-मुरनि रस झरनि दुहुन की, हिलनि मिलनि हिय हरनि हमरिया।
झमकनि झुकनि झँकोरनि झाँकी, झलमल झलमत करत कहरिया।
वोलकनि, पुलकनि हुलकनि दुलकनि, उसकनि उचकनि अनँद अधरिया।
दैं गल वाहँहिं प्रीतम प्यारी, लिपटि रहे रस ही रस झरिया।
हर्षण सुरन सुमन झरि लावत, नृत्य गान वर वाद्य वहरिया।

(50)

झुलत झूला पिय प्यारी हमारे।
तटनि सरोजा वन प्रमोद में, कुंज हिडोर मझारी।।
छाये राम श्याम घन सुन्दर, दामिनि जनक दुलारी।
रस की झरी जोर इत झरि रहि, आनँद उदधि अपारी।।
रिमिझिम रिमिझिम वर्षत वदरा, उत नभ ते वर वारी।
नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, इत छाई सुख सारी।।
उमडनि घुमडनि गरजनि तरजनि, उत ते मधुर सुनारी।
प्रकृति प्रभा ऋतु पावस सेवित, नृपति कुमार कुमारी।।
रामा रमन राम की रमकनि, हर्षण को हिय हारी।

अष्टम दिवस

(51)

प्राण प्यारे रचे अहो अनुपम हिडोर।
श्रावण सुख मन भावन दीन्हें, झूलैं संग लिये रसवोर।।
पाइ प्यार लखि कृपा रावरी, हर्षित हिय में उठे हिलोर।
मुसुकनि मधुर चितय चित चौरनि, निरखत मन में मचै मरोर।।
श्याम शरीर मयंक मुखहिं लखि, लोभहिं लाजहिं काम करोर।
अलिन आस करि पूर कृपानिधि, तिनहिं दिये सुख सहज अभोर।।
आनँद सने मेह मधु वर्षत, कुहुकति कोकिल नाचत मोर।
हर्षण सरयू उमड़ि सुखहि, सनि, वर्षि सुमन सुर जय जय शोर।।

(52)

झुकि झूलै झुलनियाँ प्यारी री।
प्रियतम रस में रसी रसिकनी, पिय-गल वहिंया डारी री।।
आनँद कन्दिनि आनँद पागी, रसिया मुख रिझवारी री।
रामहु रमत रमावत रामा, वर्षत रस दिग चारी री।।
शत शशि विजित वरानन सिय को, निरखि जात वलिहारी री।
अलिगण देखि देखि सव वारैं, युगल प्रीति वड़ भारी री।।
नृत्यगान वर वाद्य ते सेवहिं, कला कुशल अविकारी री।
हर्षण झरी प्रसून की लागी, देव करत जयकारी री।।

सखि

(53)

अमवा की डारी झूलै श्यामा सँवरिया, मोहें हो मनवा हमार।
कुहु कुहु कुहकति कोयल कारी, पपिहा पी पी शब्द उचारी।
सुख उपजत भारी हर्षे प्यारो पियरवा। मोहें हो ...
रिमिझिम रिमिझिम कारे कारे, वर्षे वदरा उमड़ि उदारे,
नचि नचि सुख पारी केकी करतो कहरिया।। मोहे हो...
उछरति सरयू युगल किनारे, प्रकृति प्रभा मन मोहनि डारे,
वर्षा ऋतु पारी सोहे धरा हरहरिया।। मोहे हो....
अलिगण सोहहिं हैं चारो ओरी, रिझवहि सवहिं किशोर किशोरी,
नृत्य कलाकारी गति वाद्य झनकरिया।। मोहे हो...
सीताराम ह्रदय के हारी, मूरति सुख सुखमा श्रृँगारी,
चितकर्षण कारी हर्षण आनँद अपरिया।। मोहें हो ...

(54)

झूलैं झुलनमा आज री मोरे मन के मोहनमा।
आनवान क्या शान सुहावै, चमकति दमकति छवि छहरावै।
मदन मोह शशि लाज री।।
है अतिशय अभिरामिनि आभा, हिय की हरणि सुखहिं सुख लाभा।
जानहिं अलिन समाज री।।
चितवनि मुसुकनी चित्त की चोरी, बने परस्पर चन्द्र चकोरी,
सिय-~~[illegible]~~ रस राज जी।
भाजन

सखि गण झुकि झुकि झमकि झुलावैं, प्रमुदित व्है कोउ पान खवावैं,
कोउ लिये सेवन साज री।
नृत्यकला नैपुण्य नवैली, नाचहि गावहिं प्रेम पुतेली,
वर वाद्यहिं वहु वाज री।
परम प्रसन्न पिया अरू प्यारी, बैठि हिडोरैं हर्ष हिये भारी,
रसवर्धन के काज री।
मेघ मलारिह गावन लागे, वेणु वजावत उर अनुरागे,
गंधर्वन सिर ताज ही।
अमर अकाश निशान वजावत, जय जय कहत पुष्प वर्षावत्,
हर्षण हर्षित भ्राज री।

(55)

नवल रसिक झूलैं, प्यारी संग लीन्हें।
मन सो मन, दृग सों दृग दीन्हे।।
चारूशिला अलि हरषि झुलावै, गावै तान नवीने।
वजत मृदंग ताल सारंगी, लेत तान स्वर झीने।।
बढ़त उमंग अंग अंग छिन छिन, पिय प्यारी रंग भीन्हें।।
ज्ञानाअलि छवि निरखत टाढ़ी, सो समाज चित कीन्हे।

(56)

प्यारो प्यारी को झुलावे, गावे रसभरी तान।
कनक भवन में कनक हिडोला, रवि शशि ज्योति लजावै।।

चहुँ दिशि ललित वितान बादले, झालरि झुमका सुहावैं।
इत घन गरजत रिमिझिमि वर्षत, मृदु मृदंग धुनि छावै।।
रसिक अली सिय प्रीतम उपर, वार वार वलि जावैं।।

(57)

झूलन की झाँकी अजब बनी है, प्यारी संग झूलै पियरवा रे।
श्यामलि सुरतिया पै गोरि सिय सोहति, अखियन में सोहे कजरवा रे।।
भूषण वसन राम सिय राजत, रति अनंग छवि छोरवा रे।
सरयू तीर प्रमोद विपिन में, हरि लीन्हो मेरो हियरवा रे।।
घन गरजै चमकै दामनिया, सुनि सुनि वोलत मोरवा रे।
नान्हि नान्हि वुदिया परत भूमि पर धिरे धिरे वहत समिरवा रे।।
रामशरण दम्पति सुखमा लखि, नैनन रहै जल धरवा रे।
झूलन की झाँकी में चित नहि जाको, जनु भूँकत कुकर सियरवा रे।।

नवम दिवस

(58)

नई नई गोरिया करिकै श्रृँगार सब,
झूलन चली हैं नव सावन उमंग भरि।
लहँगा सु कटि देश किंकिणी अनूप वेश,
ओढ़नी कुसुम रंग मोतिन किनारी जरि।।
चोटिया गुही है भाँति रतन की लागी पाँति,
नेनों में काजर गले हीरन की पंच लरि।
वादर घुमड़ि आये विजुरी चमकि छाये,
नान्हीं नान्हीं वुंदिया झमक झम झम झरि।।
कोकिला, कुहुक जागे मोरिला नचन लागे,
पपिहा वोलन लागे, पिउ पिउ करि करि।
ओसरी ओसरी झूलै, पिय प्यारी को झुलावैं,
गावैं राग सुहब मलार तान धरि धरि।।
उडत बसन खसि पड़त भूषण अहि,
हँसि, हँसि रघुवर देत हैं सुधारी करि।

(59)

क्या मजा सावन की सखि मौसम जो आई है।
दशरथ का वांका छैल ने झूला लगाई है।।

जरकस को चीरा शीश पै कलँगी झुकाई है।
जुलमी जुलफ जैसी मानो नागिन जगाई है।।
केशर को चन्दन भाल में कुण्डलि सोहाई है।
नेनों कटारी मारि कै घायल बनाई है।।
क्या छटा राघव की वनी नेना लोभाई है।
दशरथ कुंवर के हाथ में तन मन ठगाई है।

(60)

झूलद सिया वल्लभ लाल।
लाल कंचन सम्भ सुन्दर, ललित डाड़ी लाल।।
लाल भूषण अंग झलकत, लसत चीर सुलाल।
लाल दोउ के वदन शोभा, अधर वरी लाल।।
लाल सखियाँ लाल गावत, सव झुलावैं लाल।
मोर हंस चकोर कोकिल, भनत वानी लाल।।
लाल रीझत लाल उपर, परस्पर सब चाल।
कृपानिवास वास सुलाल, जोरी निराखि नैन निहाल।।

(61)

हरित हिडोरे हरू हरू झूलत, हरितहिं हरित हरी रे हारी।
हरित वसन वर हरित विभूषण, हरितहिं हार परी रे हारी।।
हरितहिं सिया साटिका शोभित, भूषण हरित जरी रे हारी।
हरित हरित सिय सखी सुहावैं, हरित चीर छहरी रे हारी।।

हरित हरित तरूवर वर वेली, हरितहि धरा धरी रे हारी।
श्रावण हरित हँसत हरि हेरत, हरित लहर लहरी रे हारी।।
केकी कीर हरित मन मोहें, विहँसत राम ढरी रे हारी।
हर्षण हृदय हरीतिमा हेरत, हर्षि कहो हरि हरी रे हारी।।

(62)

आली सा रे ग म प ध नी गायें।
तत्त थेई ता थेई थेई, नँच नँच पियहि रिझावैं।।
ताधिन्ता धिं धिं ताधिन्ता, मधुर मृदंग मोंहायें।
मेघ मलार राग अनुहारत, प्रीतम वेणु वजायें।।
देखो देखो झूलन झाँकी, सबके चित्त चोरायें।
पावस लिये विभूति को अपने, श्रावण साज सजाये।।
नृपति किशोर किशोरी सेवत, आनँद अतिहि अघाये।
हर्षण सखी प्रीति में सेवहिं, लली लाल सुख पायें।।

(63)

पिय प्यारी बने दोउ चन्दा चकोर।
उदित पूर्ण अथवै नहिं कवहूँ, अलिन हृदय नभ करके अँजोर।।
रसते पूर्ण रसहिं करि वर्षा, सींचें सदा जन औषधि अथोर।
प्रिय दर्शन सव कहँ सुख दायक, करत रहैं, जड़ चेतन विभोर ।।
मुख मलीनता राहु न ग्रासे, शीतल सुखद सतत रस वोर।
परिकर उडगन वीच सुसोहैं, हृदय हरण करि कृपा की कोर।।

साधु समाज समुद्र वढ़ै नित, देखि देखि उर उमगत हिलोर।
हर्षण ह्रदय हिडोरे झूलत, रसे रहैं दोउ चित्त के चोर।।

(64)

भींजि रहे दोउ प्राण, आज मणि पर्वत झूलत।
उमड़ि घुमड़ि घन घहरत वर्षत, चपला चमकि चुपान।।
वोलहिं मोर मुदित मन नृत्यत, श्रावण समय सुहान।
सरयू उर्मि उठति उर उमगति, मनहु मनोर्थ महान।।
उतरि हिडोर प्रिया अरू प्रीतम, ठाढे तरू तर आन।
सिय शिर श्याम स्व अम्बर कीन्हे, मानहु पीत वितान।।
पिय मुख जल कन सिय पट पोंछति, सिय मुख पिया सुजान।
भींजे पट तन द्युति लखि सखियाँ, हर्षण हर्षि लुभान।।

दशम दिवस

(65)

सावन लागु सुहाई हो पियरवा।
मनसिन घेरि घटा नभ छाये, रस वरसत झरि लाई।।
पिउ पिउ कोकिल मोर पुकारत, सुनि सुनि जिय तरसाई।
कुसुमित विपिन प्रमोद लता तरू, सननन चलि पुरवाई।।
झुलिहों मैं आज रसिकमणि तोहि संग, प्रीतम प्यारे रघुराई।

(66)

धीरे धीरे से झुलावो मेरी प्यारी ललना।
सिया अति सुकुमारी, झोका भारी भल ना।।
यह रूप की निकाई, विनु देखे कल ना।
सखी चाहती है नैंना, यह लागे पल ना।।
श्रमसीकर सुहाई, वेसर मोती हलना।
कहै सुधामुखी गाय, पिया मन छलना।।

(67)

दै गलवाही झूलै दोउ आज।
सरयू तीर तमाल कुंज में, जनक लली रघुराज।।
काह कहुँ सखि कहत वनै ना, कोटिन सुख के साज।
मधुर अली सव तजि संग झुलिहों, छोडि लोक कुल लाज।।

(68)

सियपिय दोंनो झमकि झुकि झूलैं।
झोंका देत परसपर हँसि हँसि, फहरत अरूण दुकूलैं।।
तिरछी तकनि सांग सों हूलै, होत अलिन उर शूलैं।
मधुरअली आनँद के मारे, प्रेम विवश सुधि भूलैं।

(69)

भरियों पैगें सम्हार हो मोरी प्यारी न डरपै।
हौ तुम पुरूष कठिन छलकारी, वे हैं सिय सुकुमार हो।।
झमकि झमकि झूलन झकझोरत, निर्दय निपट कुमार हो।
सखियन कान छोरि जो देहौ, फल भोगिहो हिय हार हो।।
तिय करि तुमहिं वोरि रंग फागुन, खेलि हैं फाग पुकार हो।
सुनि सखि वैन श्याम मधु मुसुकत, रसिया रस रिझवार हो।।
झूलत चितय चित्त कहँ चोरत, मन मोहन सुख सार हो।
हर्षण हँसि हँसि लगी झुलावन, सखियाँ सिय सरकार हो।।

(70)

धीरे-धीरे झुलनियाँ झूल अव मोरे प्राणों के प्राण।
धीरे झूलत अति सुख उपजत, भय नहि होवति भूल।।
पुष्प हार मणि माल न टूटत, हियहु रहै विन हुल।
अरूझि हिडोर न फाटत सारी, वायुहू भरै न धूल।।
उडि उडि वसन न होंहि पृथक तन, जो जग लज्जा मूल।

झूलन खसकि भूमि नहिं आवैं, जो रस भंजन शूल।।
आनंद लहर वढै अधिकाधिक, जावहि सखि सव फूल।
हर्षण प्रिया वचन सुनि प्रीतम, झूल हिडोर अतूल।।

(71)

मोरा छांडि दे अँचरवा , मैं तो न्यारी झूलूंगी।।
झोंका दीन्ही अति भारी, फारी साड़ी जरतारी।
अव वातों में तुम्हारी, मैं तो नाही भूलूँगी।।
वहु भूषण हमारे, गिरे टूट नग सारे।
जनि छेड़ो छलकारे, तो सों नाही वोलूँगी।।
हिय काँपत हमार, जिमि तरूवर डार।
पैयाँ लागू वार वार, मुख नाहीं खोलूँगी।।
तुम गावो लैके वीन, कोउ पावस नवीन।
विनती करो व्है के दीन, तव साथे झूलूँगी।।

(72)

सजन आज झूला झुलाना पड़ेगा, छबीले छली छल भुलाना पड़ेगा।
किया हैरान था मुझको जो फागुन के महीने में, कसर सारी गिन गिन चुकाना पड़ेगा।
उतर कर आप झूले से खड़े हो जाइये साहव, कानूनन न हीलों वहाना चलेगा।
गहि डोर रेशम कमल कर में प्रीतम, रसीली सिया को झुलाना पड़ेगा।
वढैं पेग लम्बी भूलकर न हरगिज, रसे रस रसिकवर बढ़ाना पड़ेगा।
खता माफ चाहो तो जुरमाना यह है, सिया के चरण सिर झुकाना पड़ेगा।
कियो सोई प्रीतम रसीले रसिकमणि, मोद स्वामिनि को कण्ठ लगाना पड़ेगा।

एकादश दिवस

(73)

झूलन पधारो जी श्याम सुजान।
अतर भरी अलकैं अति सोहें, हरत मदन की ज्ञान।।
रंग महल से निकसै दोऊ, कोटि उदय जनु भान।
कोउ नाचत कोउ यंत्र वजावत, कोउ उचरत मृदु तान।।
कोउ कर चंवर छत्र कोउ लीन्हैं, कोउ लिये पानन दान।
प्रिया सखी भुज अंशन दीन्हैं, वतियाँ करत लगि कान।।

(74)

जरा झूलो न लाला हमारे संग।
तुम प्रीतम हम प्यारी वनी हैं, तुम दीपक मेरे नैना पतंग।।
तुम रसिया हम आली छवीली, लागो है नेह पिया तुम्हरे संग।
सरयू सखी झूलन को निकसी, वाजै मृदंग तहँ उठै तरंग।।

(75)

तनिक तुम धीरे लला झुलावो।
डरपति सुकुमारि किशोरी, डोरी मधुर हिलावो।।
रचि वीरी निज करन खवावो, शीतल विजन डुलावो।
अपने नैन चकोरन सिय मुख, इन्दु सुधा छवि प्यावो।।

सोरठ गौंड मलार सोहावन, मधुर सुरन कछु गावो।
रसमाला तुमहुँ संग झूलो, नैना सफल करावो।।

(76)

झूलत झमकि किशोर किशोरी।
कनक हिडोरे बैठ मुदित मन, सखियन के चित चोरी।।
पैग भरत पिय उमगत उर में, झूलन को झकजोरी।
सिय को समय देखि अलि रोकहिं, तदपि करत वरजोरी।।
सखि संकेत उतरि तव प्यारी, अन्य कुंज गई भोरी।
प्राण वल्लभहिं पाय न रघुवर, गये विरह रस वोरी।।
खोजि विनय करि मान छुड़ायो, अलियन वहुत निहोरी।
हर्षण युगल लगे पुनि झूलन, प्रीति पगे सुख सोरी।।

(77)

झूलत नृपमणि मुकुट दुलारे, संग सिया सुकुमारी पिअरिया।
आनँद मूर्ति पिया अरू प्यारी, आनँद मूर्ति सखी सुकुमरिया।।
विपिन प्रमोद सुखद सरयू तट, आनँदमयी कदम की डरिया।
आनँद मयी मेह की वर्षनि, मोरी मोर नटनि हिय हरिया।।
पपिहा पिउ कहि प्रीति जगावत, कोकिल कुहुकनि आनँद करिया।
आनँद मय अलि नृत्य नवल नव, आनँद मयी गीत रस झरिया।।
वीणा वेणु वजावनि मधुरी, आनँद वोल मृदंग सुघरिया।
हर्षण आनँद सनि सुर सिगरे, वर्षि सुमन जय जयति उचरिया।।

(78)

पिय प्यारी रसे रस आज, झमकि झुकि झूलि रहे।
निरखि निरखि एक एकन दोऊ, सुखहि सने भल भ्राज।।
प्यारी कहति झुलन सुख पियते, पिय जू प्यारिहि गाज।
सियजू कहैं सलोंने सैंया, रस वर्धन रस राज।।
सैंया कहत सिया रस दायिन, सखियन सहित समाज।
सखी कहैं जय जानकी वल्लभ, राम वल्लभा भ्राज।।
झाँकी युगल रसीली रस भरि, सुख सरसन के काज।
हर्षण हमहिं दिखायो हिय हरि, धनि धनि मधुर अवाज।।

निर
प्रीतम
श्री
नव

द्वादश दिवस

(79)

झमकि झुलौंगी सैंया तोरे संग, ऋतु सावन की वहार।
सरयू किनारे नई नई गछिया रे, जहँ रचे मदन वजार।
रमकि वहत पुरवईया रे, वुन्दन परत फुहार।
धरि धरि तोरे गलवहियाँ रे, गाऊँगी राग मलार।
श्याम सखे कदम जुरि छहियाँ रे, नित नई करिहों वहार।

(80)

हेरो हेरो सिया छवि आज, पिया संग झूलि रहीं।
निरखि निरखि सुखकन्द चन्दमुख, हरषि, हरषि सरस सुख पाय,
अपनपौ भूलि रहीं।।
प्रीतम हू अवलोकि सिया छवि, निज मति गति सरसाय, महामुद भूल
रहीं।।
श्री चन्द्रकला श्री चारूशिलादिक, दुहुदिशि शौक बढ़ाय, झमकि
झौका झूलि रहीं।।
नव नागरि सिय पिय नव नागर, दृगन रही छवि छाय, सु प्रीतिलता
फूलि रही।।

(81)

देखो देखो री झूलत मिथिलेश दुलरी।
संग वहिनि अमित सहचरि सिगरी।।
नव वयस नवल अंग रंग चुंदरी
दृग अंजन तिलक हलनथ वेसरी।।
झौका अरस परस, देति मति अगरी।
शुभ तडित चमक, वरषत बदरी।।
लखि मोहि रमा, शारद गौरी रति री।
लखि नवलप्रिया के बड़ भाग फल री।।

(82)

आज तो अवध सैंया, झमकि झुलाऊँगी।
मीठी मीठी तान गाय, मन्द मन्द मुसुकाय,
झोकन को मारि हिय, सुख न समाऊँगी।।
लट सुरझैंहों उरझैंहो मन आपनो री,
कँठ सों लगाय हिय, तपनि बुझाऊँगी।
पान को पवैहों ताको उगलि न पैहों आली,
"मोहनी' वदन लखि, सुख न समाऊँगी।।

(83)

झूलत कृपा मयि और कृपाल।
रस वर्षाय सखिन सुखदेवत, धनि धनि लाली लाल।

दै भुज अंश परस्पर पैखहि, रसिक रस प्रद रसाल।
जिय की जरनि हसत हँसि हेरत, चित चेरत चष चाल।
बैठि हिडोरे केलि करत दोउ, मन मोहक वर वाल।
अलिगण निरखि सुखहि सुख भींजी, जय कहि होंहि निहाल।
सुरहुँ मुदित मन सेवा करहीं, झरत पुष्प अरू माल।
हर्षण आनँद आनँद चहु दिशि, छाय रहयों तेहि काल।

(84)

मधुर मधुर मधु अमिय झरन झरि, झुलना झुलत पिय प्यारी।
दै भुजफन्द लिपटि रहे दोऊ, रसिक राय रस वारी।।
नीलमणी तरू कनक लता जिमि, अरूझि, रही छवि भारी।
चितवनि मुसुकनि चित की चोरनि, ह्रदय हरणि सुख सारी।।
पुष्प विखरि वतरानि परस्पर, रस बर्धनि रस झारी।
अलिगन नृत्य गाय के रिझवहिं, राजकुआँर कुँआरी।।
वन विभूति वर्षा ऋतु सेवति, दृग सुख वितरन वारी।
हर्षण सुरहु सुमन झरि लावत, लखि झूलन छवि न्यारी।।

त्रयोदश दिवस

(86)

मिथिलापुरी सुहावनी, श्रीकमला के कूल।
बन उपवन चहुँ राजहीं, वाग विपुल समतूल।।
वापी कूप सरित सर, लखि सुर मुनि मन भूल।
श्री मिथिलेश महिप-मणि, जनक लली सुख मूल।।
सुखमूल जनकलली भली, भुवनेश्वरी भू नन्दनी।
श्री जनक जाया मैथिली, अति निर्मली सुर वन्दनी।।
रानी सुनयना लाड़िली, गुण आगरी सुख कन्दिनी।
रघुवीर प्राण वल्लभा, प्राणेश्वरी सुख चन्दिनी।
गृह गृह झूलहि झूलना ललना सजि श्रृंगार।
चन्द्र वदनि मृग लोचनी, सुषमा अंग अपार।।
पिक वयनी स्वर-लापहिं, गावहि राग मलार।
गहि गर भुज हँसि झोकहीं, उर कहि जानु सम्हार।।
जनक नगर निरखहिं नभ, चढ़ि चढ़ि विवुध विमान।
वर्षहि सुमन सअंजलि, वजवहि मुदित निशान।।
किन्नर छकित चकित चित, गत गन्धर्व गुमान।
देववधू हिय हर्षहिं, करि सिय महिमा गान।।
करिगान सिय महिमा, मनावहिं जयति श्री सिया स्वामिनी।
जय जयति जानकी 'रमण' चरण सरोज, प्रेम प्रदायिनी।।
त्रिभुवन तिलक तिरहुत विदित, निगमादि वर्णित मेदिनी।
सतसंग अनुभव गम्य, रसिकन जीवनी भव भेदिनी।।

(86)

दोउ जन लेत लतन की औंटें।
कछु पुरवाई चलत घन गरजत, कछु वून्दन की चोटैं।।
डरपित सिय पट छाँहि करत पिय, वांधि भुजन की कोटैं।
उतफहरत पंचरंगी पगिया, इत चूनर की गोटैं।।
यह छवि लखि दृग 'विन्दु' प्रिया प्रीतम के पाँय पलोटैं।

(87)

हिडोरे झूलत दोउ सरकार।
श्री मिथिलेश लली संग राजत, श्री अवधेश कुमार।।
दामिनि लरजि गरजि घन वरसत, रिमिझिमि परत फुहार।
झुकि झुकि लाल लली मुख निरखत, मानत मोद अपार।।
मानहु अरूण 'विन्दु' पंकज पर, भ्रमर भ्रमत वहुवार।

(88)

अरे रामा रिमि झिमि वरसे पनियाँ, झूलैं राजा रनियाँ रे हरी।
घिरि आये घुमडि घनकारे, परैं रिमि झिमि बुन्द फुहारे,
अरे रामा चमकि रही दामिनियाँ।।
अंग अंग में भूषण निराला, गरै सोहे मणिन की माला,
अरे रामा कमर पड़ी करधनिया।।
दोउ झूलै सुरंग हिडोला, विन दाम लेत मन मोला,
अरे रामा, मन्द मन्द मुसुकनियाँ।
गलवहियाँ दिये दोऊ झूलै, हो 'मस्त' हिये दोउ, फूलैं,

अरे रामा भूलैं नहिं चितवनियाँ।।

(89)

नई रे सावन नई मेरो सांवरो, नई सिया युगल किशोर।
नई नई डरिया कदम तर, नई नई रेशम डोर।।
नई नई सखियाँ झुलावन आई, नई झूलैं राघव चितचोर।
नई नई भूषण वसन राजे नई, नई नयनन कोर।।
नई नई चातक भनत वाणी, नई नई दादुर शोर।
नई नई पुरवा रमकि बहे, नई मेघवा घन घोर।।
नई नई बुंदिया परन लागी, नई नई वोलत मोर।
नई नई सरयू बढ़न लागी, नई नई दिशा घनघोर।।
नई नई विपिन प्रमोद शोभा नई, नई चित के चकोर।
नई नई 'रामशरण' दोऊ नई, नई रस में वोर।।

(90)

प्रीतम प्यारी वसो उर ऐसे।
झूलत कुंज हिडोर हरषि हिय, रस रसिया रस लय से।।
क्रीट चन्द्रिका मुख से मुख मिल, अधर पियत प्रिय पय से।
हिय ते हृदय मेलि भुज फंदनि, गण्ड मेलि मधुमय से।।
अरूझी अलकैं एक एक ते, मिलहिं नगिनि दुई जैसे।
निरखि निरखि सखियाँ सुख सानहिं, मिली महानिधि तैसे।।
नृत्य गान करि वाद्य वजावहिं, रमी रहै विनु भय से।
हर्षण करि कैकर्य मगन मन, जेहि ते दोउ सुख सय से।।

झूलन झाँकी का मंगल
(एक पद प्रतिदिन)

(91)

सदा झूलैं मोरे प्यारे, विराजै संग सिय स्वामिनि।
बढ़ें आनंद झूलन का, झुलावैं नेह भरि कामिनि।।
सुधा संगीत की झरि झरि, डुवावें मोद मन भरि भरि।
नचै. अलि तान लै लै के, वजावैं वीण वर भामिनि।।
मेह वर्षे बूँद रिमझिम, चमकि चपला बीच थिम थिम।
नृत्य वन मोर मोरी का, सुहावै पिक कुहुक नामिनि।।
सरित सरयू लै हिलोर, हरित महि की प्रभा जोरे।
निरखि सुख नयन तारे को, सदा हो सहित अभिरामिनि।।
लखै झाँकी सुरहु फूले, वर्षि सुमनहिं भान भूले।
बजावै वाद्य वहु हर्षण, उचारे जयति सुख धामिनि।।

(92)

गावो गावो री झूलन झाँकी मंगल।
प्रेम पगे पिय प्यारि झूलैं, सदा सुखहिं सरसावो री।।
अरस परस दै अंश भुजहिं को, मुसुकनि मधु मय पावो री।
चितवनि चारू चलत अलि ओरी, निरखत नेह नहावो री।।
रंग रँगे अरूझे आलिगन, चुम्बन पेखि जुडावोरी।
नृत्य गीत वर वाद्य सुधा को, अलिगन दुहुँन पिआवो री।।

श्रावण सदा सुहावै नीको, घन दामिनि दमकावो री।
नाचि मोर सरि लहरैं हर्षण, सुरन सुमन वरसावो री।।

(93)

सदा झूलो मेरे दिलवर बढै उत्साह नया।
जियो युग युग प्रिया प्रीतम, यहि है चाह नया।।
लता वितान बन प्रमोद तीर सरयू के,
हिडोल अति विचित्र मनिमय तैयार नया।।
अनेक यँत्र वाजते मृदंग वीणादिक,
अलापती है गान कला, सजे साज नया।।
यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,
बैठे झूलन पै दिखाते रहो, मुख चाँद नया।।

(94)

हो, सरयू कूले वना रहे सावन,
पिय प्यारी नित झूला झूलैं, अलिगन झमकि झुलावन।।
घन गरजनि चमकनि दामिनि की, मोरवा वोल सुनावन।
वाजहि वीण मृदंग मुरलिका, राग रागिनी गावन।।
छत्र फिरावन व्यजन चलावनि, दोउ दिशि चँवर ढुरावन।
मन्द हँसनि चितवनि रस वोलनि, नैननि शैनि चलावन।।
अतर पान माला की पहिरन, अरस परस मन भावन।
भूषण वसन अंग अरूझावन, भुज से भुज लपटावन।।

गेंद उछारन कमल फिरावन, रसिकन हिय सुख छावन।
रस माला तृण तोरि अशीषत, राइलोन उतारन।।

(95)

आज के विछुड़े न जाने कब मिलेगें।
आयेगा कव सुखद सावन रसिक मनहर,
सजल घन रस झरत झरना शीत मृदु तर।
मोर शोर अथोर दामिनि दमक घनवर,
हरित भूमि लता वितान भरे सरित सर।
लाडिली के साथ लालन मधुर झूलन कव सुलैगे।
आज के विछुड़े न जाने कव मिलेगें।।
आज से फिर दिन गिनेंगे भक्त प्रतिपल,
व्याह होली चैत्र नवमी आदि उत्सव।
फूल बंगले की छटा को देखते ही,
मधुर पावस आगमन होगा अवध पर।
विरह पावक से जले नव कुंज मानस तब खिलेंगे ।। आज.......
मास भर सदगुरू सदन रस रंग वरसा,
तीज की शुभ रात सुख का हृदय करसा,
प्रात सरयू तट अघट पर वरसि रंस रंग की वहार,
आज भी आखों समाई है वही झूलन विहार।
श्री जानकी वर वाग में फिर आप जाने कब मिलेंगे।। आज.......
श्री सिद्धि सदन वाग के नव सुमन लोभी ये भ्रमर,

लाड़िली नव अंग सौरभ घ्राण कर हो मत्त प्रियवर,
नित चकोर वने रहो लाडिली मुख चन्द्र का,
पान कर युग युग जियो प्रिया कंज परन्द का।
'मधुर' झूलन ये सदा दृग में झूलेंगे।।
आज के विछुड़े न जाने कब मिलेंगे।।

(96)

सिय रानी का अचल सुहाग रहे,
राजा राम के सिर पर ताज रहे।
जब तक पृथ्वी अहि शीष रहे।
नभ में शशि सूर्य प्रकाश रहे।।
गंगा जमुना की धार रहे।
तब तक यह वानक बना रहे।।
ये बना रहें वे बनी रहें,
नित वना वनी में वनी रहे।।
अविचल श्री अवध का राज रहे।
प्रेमी जन का वड़ भाग रहे।।
सुहाग रहे सिर ताज रहे।
महारानी अमर महाराज रहे।।

शयन

(97)

चकई न वोले श्याम बैठ क्या वोल वोले
कोकिल अकुलानी कही कोकली विछनी है।
दीपक की मन्द ज्योति तेलहूँ ते पूर नाहिं,
जागतपुरी के लोग लश्कर निगरानी है।
घंट घहरानी कहीं अवध घर पूत भयो,
चिरयाँ चहचहानी कहीं अहिनौ डरानी हैं।
जान दो तो जान दो न जान दो तो साँची कहो,
सूरज की किरण श्याम देखो दरसानी है

(98)

महल पधारो नैना आलस भरे।
लोचन फेरि हेरि हँसि, नागर मनमथ पाँव परे।।
झमकि चले जनु मदन झूमते, संखियन वाँह धरे।
छूटत छवि की छटा, अटा चढ़ि मधुर गान उचरे।।
वरसत सुमन सुगन्ध फुहारे, सेज भवन उधरे।
कृपा निवास श्री जानकी वल्लभ, रैन सैन सु ढरे।।

(99)

अब हमारे प्राण प्रीतम, प्यारे अलसाने लगे।
छिनहि छिन अँगडाइयाँ लै लै कि जमुहाने लगे।।
चंचलाहट हट गई, उत्पन्न भोरापन हुआ।
नीद से माते नयन, नव कंज सकुचाने लगे।।
रैन हूँ वीती वहुत, नभ मध्य उडगन आ गये।
गीत राग विहागसव, गायक गुणी गाने लगे।।
दूसरी नौवत वजी, घड़ियाल भी दीन्हों गजर।
पाहरू आये अपर, पहरै को बदलाने लगे।।
लै चलो 'हरिजन' उठाकर प्यारे को सुख सेज पर।
सैन छवि निरखन को अव मम नयन ललचाने लगे।।

(100)

चलो सखि सो गये राज किशोर।
मणिनि जड़ित को पलंग मनोहर, ताकी छवि अति जोर।।
मिल सखियाँ सब चरण पलोटत, रस वस दिय घन घोर।
चौकीवाली सजग होय रहियो, लागे न कहुँ दृग चोर।।
नूपुर दावि चलो मोरी सजनी, होय न जेहि पग शोर।
सुभग सेज सियराम सयन लखि, ललचत है मन मोर।।
श्री अग्र अली दम्पत्ति दरसन हित, आवेंगी बडीं भोर।

झलन आरती
(झूलन के आरम्भ और अन्त में)

(1)

आरती करू सखि श्याम सुन्दर की।
मन मोहन प्रीतम सियवर की।।
मदन दम्भ के खम्ब गडे हैं, कनक दण्ड मणि रतन जड़े हैं।
पदुली द्युति जग मगति अड़े हैं, तहँ वैठे दोउ सुख सागर की।।
दिनकर सम शिर क्रीट धरे हैं, चन्द्र ज्योति चन्द्रिका परे हैं।
तरिवन कुण्डल झलक भरे हैं, नासामणि गुलाल छवि धर की।।
ताल पखावज वीण वजत है, चन्द्रकला सुभगाजु नचत हैं।
थेई थेइ थेई चहुँ ओर मचत हैं, रीझत नवल रसिक नागर की।।
झूलत सिय रघुवर सरसत हैं, झमकि झुलाय सखिन हरषत हैं।
कुसुमन झरि सुरतिय वरषत है, जै जै कहि दोउ सुखमाकर की।।

(2)

आरति झूलन की कीजै, मधुर छवि नयनन लखि लीजै।
लली लालन राजै भरि प्यार, सु नख शिख सजे सुभग श्रृँगार।
मदन मद तजै, सूर शशि लजै, डोल छवि छजै वलैया वार वार
लीजै।।
नीद वश कवहुँ कवहुँ झुकि जात, सखिन तन हेरि सकुचि मुसकात।
विहँसि जव जोहैं, नयन मन मोहैं, धरें धीर को हैं, सखिन हिय प्रेम
वारि भींझै।।

अरूण अँखियाँ सोहै. अलसात, अँगैठी लै लै के जमुहात।
अधिक निशि झूलै, प्रेम वश भूले, परम सुख मूलै, निछावर तनमन
करि दीजै।।
झूलन की झाँकी तजी न जाय, नयनमा अधिक अधिक ललचाय,
प्रेम वस रसै, युगल जो लसैं, उर अन्तर वसैं,
तवहिं रसकान्ति लता जीजै।।

(3)

आरति युगल किशोर की, सखियन के चित चोर की।
झूलन कुंज पिया अरू प्यारी, छवि श्रृंगार अनूप अपारी,
झूलत हरित हिडोर की।। आरति.......
गरजि तरजि घन दामिनि सोहैं, रिमिझिम रिमिझिम वरस विमोहै,
नाचनि मोरी मोर की।। आरति......
पपिहा पिउ पिउ शोर मचावै, कोयल कुहू कुहू कहि गावै,
वोलनि दादुर जोर की।। आरति......
नदी नार सवहीं उतराई, तरल तरंग दृगन सुखदाई,
सरयू सरित हिलोर की।। आरति.....
चहुँ दिशि छवि छाई हरियाई, कुसुमित वन की कहै को गाई,
पवन वहत झकझोर की।। आरति...........
छत्र चमर लै सखिगण सेवहि, नाच गाय प्रभु को सुख देवहिं,
नूपुर के नव शोर की।। आरति........
हर्षण वीणा वेणु वजावहिं, सवके हृदय हर्ष उपजानाहिं,
सुख सुषमा रस वोर की।। आरति............

श्री सीतारामाभ्याँ नमः

वेदों में परमात्मा को रसमय (रसो वै सः) कहा गया है तथा इस रस को प्राप्त किये बिना यथार्थ सुख की अनुभूति नहीं हो सकती। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम की सच्चिदानंदमयी रस लीलाओं को एकान्तिक और गोपनीय रखने का विधान है, इसलिये ये लीलायें रसिक भक्तों को अदभुत प्रेम का रस प्रदान करने वाली होती हैं।

वर्तमान युग (1917-2012) में प्रेमावतार, पंचरसाचार्य अनंत श्री विभूषित श्री स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज (अयोध्या) ने प्रभु श्री राम की प्रेमपुरी (मिथिला) में सम्पन्न होंने वाली दिव्य मधुर लीलाओं को भक्तों के कल्याणर्थ प्रत्यक्ष किया था। इनमें श्री आचार्य चरण द्वारा लिखित ''लीला-सुधा सिन्धु'' तथा ''सीता जन्म प्रकाश'', उनके आश्रित श्री सुरेन्द्र कुमार रामायणी द्वारा लिखित ''पौड़ी की श्री रामविवाहोत्सव पद्धति'' तथा श्रीमती सिया सहचरी जी द्वारा लिखित ''श्री हर्षोत्सव'' (जिसमें श्री सीताराम विवाहोत्सव के अतिरिक्त होली, रास, फूल बंगला और रथयात्रा का भी विवरण है) श्री रामहर्षण कुंज, नयाघाट अयोध्या से प्रकाशित हो चुकी हैं।

मुण्डोपनिषद (3/1/1) में ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया'' से जीवात्मा का परमात्मा से सहज ही सख्य भाव सिद्ध होता है। इसमें भी मैथिल सख्य रस की अनुभूति तो अदभुत है। श्री आचार्य महाप्रभु (श्री स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज) तो मैथिल सख्य रस के प्रकट अवतार ही थे। उनके द्वारा प्रणीत ''प्रेम रामायण'' महाकाव्य

तथा सिद्धान्त ग्रन्थ ''रस-चन्द्रिका'', में इसे प्रकट देखा जा सकता है।

संत श्री अवध किशोर दास जी द्वारा रचित ''मैथिल माधुरी'' मैथिल सरव्य रस की अनूठी पुस्तक है। इस पुस्तक की ''रक्षा बन्धन-लीला'' के आधार पर ही खजुहा (रीवा) और अयोध्या में राखी पर्व पर रक्षा बन्धन की एकान्तिक लीला का आयोजन किया जाता है। इसके गोपनीय रखने का मुख्य प्रयोजन यही है कि श्री किशोरी जी से रक्षा-सूत्र प्राप्त करने का अधिकार उन्हीं का होता है जो स्वामी जी से अथवा इस रस के परम भागवत रसाचार्य से सम्बन्ध पत्र प्राप्त कर चुके हों। अस्तु इस लीला का कथन, श्रवण और समायोजन केवल अधिकारी भक्तों के बीच ही सम्पन्न किया जाना चाहिये।

निवेदक

रसिकेश्वर दास

श्री रक्षा बन्धन लीला

भगिनी भ्रातरो वन्दे परमानंद दायकौ,
गौराँगो प्रेमदातारो जानकी जनकात्मजौ।
रसस्वरूपिणों नव्यौं भव्यौ भावदाय कौ,
सीता लक्ष्मीनिधि वन्दे पूर्ण चन्द्रतिमाननौ।

समाजी– श्रीमिथिला मन हरण पुरी अतिशय छवि छावै,
सहजहिं अति कमनीय माधुरी कौन बतावै।
सबहिं ऋतुन्ह कमनीय अधिक अति पावस पाई,
जन वसुधा निज निखिल सुघरता तंह प्रकटाई।
विकसे सरन्ह सरोज मल्लिका मालति सोहैं,
कर्णिकार छविसार पीतरक्त द युति मोहैं।
कलित भये कचनार कदम्ब छटा छहराये,
तरू तरू हुवै गये हरित अनंत बसंत लजाये।
कमलादिक सरि सुभग धार वर उछरन लागीं,
जनु किलकति करि नृत्य नवयौवन रंग पागी।
अस मिथिलापुर माहिं रतन मणि सदन सुहावन,
सिय निवास अभिराम अनूप प्रभा बगरावन।
तहँ सिंहासन मध्य महीपति राज किशोरी,
सखिन्ह मध्य शुभसोह भावनामयि अति भोरी।
रक्षा बन्धन दिवस जानि अति आनंद छाई,
कहत अली री अहो श्रावणी पूनो आई।

श्री किशोरी जी आरती

श्री निमिवंश उजागरि रस–आगरी ए–
हरणि घोर त्रय शूल, जय जय जनक सुते।
कोटि चन्द द्युति आसन, मन भावन ए
विहसनि वरसति फूल, जय जय जनक सुते।
लीला कला– विलासनि सुख राशिनि ए
अहलादिनि रस मूल, जय जय जनक सुते।
नील निचोल – सुधारणि, सुख कारणि ए
विस्तारणि रस कूल, जय जय जनक सुते।
प्रेम भक्ति रस दायिनि, अनपायिनि ए
देहिं पदाम्बुज धूल, जय लय जनक सुते।
दास किशोर उचारिणी, निस्तारिणि ए –
महिमा महाँ अतूल, जय जय जन सुते।

गायन– आली आजु पूर्णिमा आई।
आली भरी सुभग सावन की आज पूर्णिमा आई।।
हरित भई कण–कण बसुन्धरा नव हरीतिमा आई।
दुर्वाकुर रोमन ते मानो पुलकावलि प्रकटाई।।
कमला अरू विमलादिक सरिता उमडि चली अतुराई।
मानहुँ अपने पितु जलनिधि धर भरि प्रमोद सब छाई।।
अस पावस हमरे मिथिलापुर रहृयो घटा घहराई।
“दास किशोर” किशोरी जू संग बड़े भाग्य इत आई।।

गीत

आई आई री सहेली शुचि श्रावण बहार रक्षा बन्धन आयो।
यह पावन त्यौहार सुहावन,
श्री गंगा जल सों अति पावन।
आज दिव्य गंगा मंह न्हाई,
पावै जीवन लाहु महाई।
न्हायो न्हायो री सहेली आई रस भरी धार, रक्षा बन्धन आयो।
भइया के उज्जवल वर भाला,
चन्दन चर्चित परम विशाला।
आजु लगावें मंगल टीका,
पूर्ण मनोरथ पावें जी का।
लूटो लूटो री सहेली नव नव सुखसार, रक्षा बन्धन आयो।
भइया को कर कंज सुहावन,
अति कोमल ज्योतिर्मय पावन।
तामंह बांधे राखी जाई,
पूर्ण काम होवें हर्षाई।
जावें जावें री सहेली नव नव बलिहार, रक्षा बन्धन आयो।

श्री किशोरी जी -

चन्द्रकले सुषमे विमले अरू हेमे सुनो इक बात सुहाई,
श्रावण पूनम को अलि जो, सब मातु पुरी अपने चलि आई।
मातु पुरी सुख को बरनै सुधि के दृग बिन्दु चले उमगाई,
सालति ख्याल किशोर सदा जब होत अली पुरी की बिलगाई।

गीत

सखि घनि धन्य हमरे भाग।
मातु पुर सुख सुलभ जिनको सुलभ नव अनुराग।।
मातु पितु भइया दुलारत निपुण ज्ञान विराग।
खाति. खेलति बालिका जहं सकल चिन्ता त्याग।।
कोटि हूँ सुख श्वसुर आलय भवन क्रीड़ा पाग।
पै न "दास किशोर" कबहूँ मिलत सो अनुराग।।

चौपाई- भई सुखी सुनि सिय की बानी,
रसमय मधुरी नेह समानी।
सुन्दर प्रेमरूप सब सखियां,
कहन लगी यों मधुरी बतियाँ।

सखियां- हे स्वामिनी सर्वेश्वरी सत्य रावरी बात,
मातु पुरी को सुख सुलभ, साचेहुँ कहो न जात।

मातृपुर क
खेलब र
गोद चढ़
कबहूँ रू
कहुं भइ
कबहूँ मु
कबहुँ क
एक
दास

श्री जू- हे प्या
का सुख सुल
अपने अपने भ
मुँह मांगा नेग

दोह
जे

गीत

स्वामिनी सत्य रावरे भाव।
मातृपुर की सुख समृद्धि को, को करि सकै प्रभाव।।
खेलब खाब स्वतंत्र घूमिवो, उर आनंद अधिकाव।
गोद चढ़ब भइया दाऊ के, भरि भरि विपुल उराव।।
कबहूँ रूठिकै अलग बैठिबो, कहुँ इत उत दुरि जाव।
कहुं भइया संग चढब हिडोरे, कहुँ संग बैठि बताव।।
कबहूँ मुदित चित कर वीणा लै, गीत कहब भरिभाव।
कबहुँ कहानी कथा कहन को, भरब हिये महँ चाव।।
एक एक सुख बरनी न जावे, कीजो कहा बनाव।
दास किशोर रमोमा शारद, तरसत देवि लजाय।।

श्री किशोरी जू-

श्री जू- हे प्यारी सखियों, हमारे भाग्य धन्य हैं जो हमें अपने मायके का सुख सुलभ है। आज पवित्र रक्षा बन्धन है, आज के दिन बहनें अपने अपने भाइयों के हाथों में रक्षा सूत्र बांधती हैं और भइया उन्हें मुँह मांगा नेग देते हैं। वे बहनें सत्य ही बड़भागी हैं जिन्हें भ्रातृ सुख सुलभ है।

दोहा- सखि भइया जाके अहें, है ताके बड़ भाग।
जेहि भगिनी के भ्रात नहीं ताकी सत्य अभाग।।

सखियाँ-

हे सिय स्वामिनीजू, सत्य ही हम सब बड़भागी हैं जिन्हें भ्रातृ सुख सुलभ है।

समाजी-

चन्द्रकला श्री भानु दुलारी, अति सुशील सब विधि सुकुमारी।
सुन्दर रसमय भेंट सजावें, राखी निज निज काहिं बनावें।
नाम लिखें तामें सब अपनो चित्रित विविध भाँति को रचनो।
गावें मिलि सब सखी सहेली, जनक लली संग अली नवेली।

गीत – आई री सहेली

किशोरी जी–

हे सखियों चलो अब भइया के मौन, कर में राखी बांधि के,
लहहिं नेग मन जौन।
पे सखि मंगिहै नेग मह वस्तु जगत में कौंन,
कहा नहीं हमको दियो, भइया ने हम जौंन।

गीत

काह अली भइया सों मांगें।
सुखद नेग रक्षा बन्धन को, काह लेंई अनुरागें।
रूचि अपनी अपनी बतावहुँ परम प्रीति मंह पागें।
दास किशोर काह मांगत सखि आज गरे महं लागें।

दोहा–

हे हेमे सुषमे अली, शीला चारू पुनीत।
भइया सों का आजु अलि, मांगे संयुत प्रीति।

सखियाँ–

काह कहें का देई बताई ?
स्वामिनि कछुक हृदय नहिं आवे, जो मांगहि हर्षाई।
काह नहीं दिन्हों है भइया, अब बाकी का बच्चो महाई।

कछु न दिखात लोक तीनहुँ महुँ जो न भ्रात सन पाई।
''दास किशोर'' न समुझि परै कुछु याचनीय येहि ठाई।

किशोरी जू-

चन्द्रकले बोलहु तुम प्यारी!
आजु काह मांगे भइया सों, अहे काह रूचि कहहु तुम्हारी।
मन भावतो बतावहु अपनो भली भांति उरमाहि विचारी।
दास किशोर लोकत्रय दुर्लभ आज वस्तु मांगहु कुछु भारी।

चन्द्रकला-

हे स्वामिनि सांची कहां, वस्तु जगत की कौन,
भइया ने हमको अरी, दीन्ही अहै न जौन।
का मांगिहें मन में सही, कछु कहि नाहिं दिखात,
भइया सों स्वामिनी कछू चीज न मांगी जात।

पद-

भइया ने सब हम पर वारयो।
अपनो सरबस हमकू दीन्हो निजहित कछु न धारयों।।
बैरागी वे भये हमहिं हित, निज सुखसों मन मारयों।
भाभी को सेवा मंह कीन्हो, निज सुख नहीं विचारयो।।
स्वामिनि वे अब रहे न अपने परम प्रीति तन गारयो।
का मांगी हैं मचलहहिं काको काह न रहयो हमारो।।
कृपा कोर सों सतत बिलोकें, यह मांगनो भायो।
''दास किशोर'' प्यार नित पावे, भाव न जात बिसारो।।

हे प्यारी स
लिये बहु रत्

किशोरी जू-

हे प्यारी सखीयों यो तो उनकी दी हुई एक छोटी सी भी चीज हमारे लिये बहु रत्न है, वे जो हमें देंगे हमारे लिये प्राण प्रिय है, फिर भी हमें मुख्यतय उनकी कृपा ही चाहिये।

दोहा-

चलहु सखी जल्दी चलहु करहु न नेकहु देर।
सुभग महूरत रसभरी मिलिहै सत्य न फेर।।

पद

चलो सखि भइया सों मिलि आवें।
सावन पूनो आज सुहावन, चलो लूटि सुख पावें।
राखी बांधि कमल कर माही, भइया को हर्षावें।
मृदुल स्वभाव परम भइया को कृपा कोर लहि आवें।
सहित सनेह मिलेंगे वे जब सब सुर वधू सिहावें।
''दास किशोर'' मोद लहि दुर्लभ, जीवन को फल पावें।

समाजी–

इमि गावत वर गीत, नवल सब राजकुमारी,
श्री विदेह नृप लली संग, तेहिं महल पधारी।
जहं युवराज कुमार कुंवर लक्ष्मी निधि प्यारे,
सुभग सिंहासन मध्य परम सुख भरे पधारे।
सावन पूनो आई अहो अतिशय सुखदाई,
सिद्धि कुँवरि सों प्रेम भरे यों बैन सुनाई।

श्री लक्ष्मीनिधि जी श्री सिद्धि जी से–

हृदयेश्वरी उरवल्लभे तुमसे कहा अज्ञात है,
मम बाम्ह अभ्यान्तर सबहिं आपको प्रतिभास है।
तबहुं बतावंहु आपको जेहि मांहि मन प्रमुदित अहै,
सुधिकरि नवल जोइ माधुरी मन मोद इक अनुपम लहै।
प्यारी निहारयों प्रातः ही है स्वप्न एक सुहावनो,

जेहि स्वप्न की नव माधुरी मंह मन अबहिं लौ अति सनो।
निरखों सुहावन भानु मंडल मध्य महत प्रकाश है,
तेहि मध्य सिंहासन सुहावन की सुरम्य विलास है।
तेहि माहि विलसति लाड़ली मोरी किशोरी सुखभरी,
झर झर झरति रस माधुरी अति मोहनी छवि छरहरी।
सेवहिं अनन्त सुशक्तियाँ कर जोरि तिन्ही मनावहीं,
पावति सुकृपा कटाक्ष ललकति भाग्य मनहु सुहावही।
प्यारी पुनःमम लाड़िली सोइ मम समीप पधारि कै,
भइया कहत पुनि दृश्य सो क्षण महँ तहां ते दुरि गयो,
सोचत मनहिं हों हे प्रिये, यह आज भानहु का भयो।

समाजी–

सुनत कुंअर के बैन, कुअरि सिद्धि हर्षाई,
सुधि करि सिय को प्रेम, अंग अंगन पुलकाई।
सुनि प्राणाधन के बैन प्रमुदित हवै गई रसरूपिणी,

सिद्धीजी–

बोली हृदय धन का कहों कहि रहि गई रस रूपिणी।
हों हू निहारयो आज कतहूँ अहै रम्य सुवाटिका,
सब विटप पादप तृण लता हूँ नवल छवि उद्घाटिका।
तेहि महँ सिंहासन सुहावन, मध्य लली विराज हीं,
तंह रमा, शिवा, सरस्वती, अति दूरतें छवि छावहीं।
बोली सरस्वति अति समय है स्वामिनी यह प्रार्थना,
दीजै हमहिं कैकर्य अपनो, नित्य यह अभ्यर्चना।
हे प्राणधन तेहि छन माहि लीला अनूप का कहों,

हों हूं सिधारी ठौर तेहिं स्मृति करति अति रस बहों।
भाभी कहत मम गोद मध्य, गई बिराजि प्रभामयी,
बोली वचन जनु झरत पुहुप अनूप रस माधुरि छयी।

दोहा-

मम सेवा अधिकार सब, है भाभी कर माहि,
हों तो इनके कर बिकी, कछु इत मेरो नाहिं।

समाजी-

इत निज कुंजन माँहि, सकल निमिवशं किशोरा,
रक्षाबंधन याद करत सब भये, विभोरा।

दोहा-

चले तुरत सब संग मिलि, लक्ष्मीनिधि के कुंज,
करि प्रणाम सब बैठिगे, कुंअर तेज के पुंज।

रोला-

बैठे राजकुमार नवल निमिकुल उजियारे,
सोच रहे हर्षाई अहो बड़भाग्य हमारे।
जनक लड़ैती लली लाड़िली, अहो किशोरी,
बंधियहिं रक्षा सूत्र करन मंह प्रमुदित भोरी।
को हम सम बड़ भाग्यवान त्रेलोकहुं मांही,
सियसी परम कृपालु उदार भगिनि जेहि पाहीं।
रक्षा बंधन आजु अहो त्योहार सुहावन,
भगिनि भ्रात उर सिंधु चंद सों अति उमगावन।
आजु शंभु सुत श्रीगणेश षटवदन कुमारा,

ब्रह्म पुत्र सनकादि इन्द्र को राजकुमारा।
हम सन सबहिं सिहात करे समता अस को है,
सिय अग्रज के तुल्य बने त्रिभुवन मंह को है।
अस सोचत सब कुंअर रहे आनन्द समाई,
तब लौं निज सखि जनन संग सिय परी दिखाई।
आवत भगिनि निहार उठे अति आनन्द छाई,
चन्द्रकला संग दिये गल बाहिं सीता पुलकाई।
प्रेम विन्दु दृग झरत उठे अंग अंग उमगाई,
भरि भरि विपुल उराव रहीं सब सखि हरषाई।
भगिनिन भाई भेंट प्रेम सरसावन हारी,
वरने कवि धों कौन धन्य जिन दशा निहारी।

गीत–

मिलत समोद भगिनि अरू भाई,
बार बार उर लाइ दुलारत परमानंद बरिणि किमि जाई।
युग आनन्द पयोनिधि मानंहु मिलत सकल तट बंध बहाई,
फेरत कुंअर कंज कर आनन पोंछत सीय अश्रु अधिकाई।
दुलरावत पुचकरि भगिनि कंह, पुनि पुनि लेत हिये मंहलाई,
पोंछत सियहु बंधु के दृग जल, कंज करन मुख कंज फिराई।
दास किशोर सिहात मगन सुर जय जय बदत सुपुष्प झराई,

समाजी–

यहि विधि सहित सनेह, भेटि भगिनी अरू भाई,
बैठे आसन मध्य प्रीति की धार बहाई।

छपप्य-

बेठायो निज गोद माहिं श्री जनक लली को,
दहिन अंक बैठाय लियो पुनि भानुलली को।
भइया गोद बिराज सुहाइ रहीं युग ललियां,
कमल कर्णिका माहिं सुहावन पाटल कलियां।
हेमा सुषमा प्यार सों, लिपट रहीं दोउ बाहुंते,
शीला चारू विनोद करि अरूझानी पुनि पृष्ठ ते।

रोला-

नंदा सुभगा प्रेम उमगि बैठी सब इतउत,
क्षेमा अरू लक्ष्मणा विराजी कर गहि सुख्युत।
औरहुं भगिनी सकल बंधु चहुं ओर बिराजे,
मानहुं श्री निमिराज भवन बहु चंद बिराजे।
सब भगिनिन तंह भेटि कुअंर निज पार्श्व बिठाई,
किन्हों अति सत्कार पान दे गंध लगाई।
तब उघटयो पट सीय थार शुचि राखिन केरो,
जागी जगमग ज्योति भानु सों भयो उजेरो।
बांधति रक्षासूत्र बंधु कर कमलन माहीं,
सो सुषमा को कहै शब्द वाणी पहं नाहीं।

गीत-

प्रमुदित आजु भगिनी लखि भाई,
बांधत रक्षाबंधन हर्षित गहि गहि मृदुल कलाई।
प्रगटत निरखि प्रेम बदननते उर नहिं मोद समाई,
होत मधुर धुनि सुनि ध्वनि नभते जय जय नाद मचाई।

''दास किशोर'' प्रगट सुख मौमा पावत मैथिल अति रस छाई।

रोला-

चन्द्रकला अरू जनकलली निमिकुल उजियारी,
भइया की शुचि प्राण हृदय की परम दुलारी।
अपर भगिनिहुं अहैं भ्रात की प्राणन प्यारी,
पै यह दोऊ कुंअरि प्राणहुं ते अति प्यारी।
गहि लीन्ही दोउ लली भ्रात की मृदुल कलाई,
सुंदर गोरे सुमंजु अहो छाई अरूणाई।
प्रेम डोर दोउ लिये अंग अंगन पुलकावें,
ललकि ललकि दोउ लखें दशा बरनी नहीं जावें।
कबहु गदेली चूमि हृदय सौ लैयं लगाई,
कबहुंक धारि कपोल माहिं निरखैं मृदुताई।
पुनि दोऊ गहि लैयं भ्रातु की मृदुल कलाई,
बांधे रक्षासूत्र दोउ मृदु मृदु बतराई।
प्रीति रीति रसभरी गांठ झट दियो लगाई,
अति सुन्दर अति अरूणं मय गौर लुनाई।
सुमन माल दोउ लिये भ्रात कूं ललकि पिन्हावें,
विधि सुगन्ध फुलेल कुंअर के दोऊ लगावैं।

दोहा-

कुंअर करन्ह मंह बांधि के रक्षासूत्र पुनीत,
सब भ्रातुन्ह के करन्ह मंह बांधति गावत गीत।

गीत-

हमारे भ्रात जन का हे विधाता नित्य मंगल हो,

हमारे दृग सितारों का विधाता नित्य मंगल हो।
करें मंगल सरिद् वर सब सभी गिरवन करें मंगल,
महोदधि सप्त मंगल दैं करें सुरवृन्द सब मंगल
चराचर से यही विनती सदा मंगल सुमंगल हो,
मिलें प्रति जन्म में भइया सदा आनन्द मंगल हो।
बंधे जो प्रीति के धागे कभी भी ये नहीं टूटें,
सदा अनुराग के मोदक भरी अनुराग हम लूटें।
मिले प्रति जन्म में भैया सदा आनन्द मंगल हो।

दोहा-

रक्षा बंधन करि मुदित, मधुर मधुर मिष्ठान।
भगिनी सकल पवावती, भ्रातन, दै सनमान।।

गीत-

भगिनि भईया को रही पवाय।
मंजुल मधुर अनूपम व्यंजन, परमानंद समाय।।
पावत मुदित भगिनि अरू भाई।
मोदक रसगोल कमाये, को बरणै बहुं भाँति मिठाई।।
भगिनी देत कवल भइया को, भइया भगिनिहिं देत पवाई।
सिय कर कमल विनिर्मित व्यंजन सकै माधुरी कवन बताई।।
सुधा सार सर्वस्व निरखि कै, सुधा दूरि रहि जात लजाई।
धन्य भाग मैथिल कुअंरन्ह कै अन्तरिक्ष सुर लखत सिहाई।।
जाचंत मिथिला जन्म विधाताहिं बार बार जय शब्द सुनाई।
जो सुख सरस आजु मिथिलापुर, सो त्रिभुवन नहिं परत दिखाई।।
दास किशोर जन्म प्रति पावै, श्री मिथिलेश कुंअर सेवकाई।

दोहा-

इमि मिष्ठान्न पवाई सिय, कियो पान व्यवहार,
निज करते सब भ्रातन्ह, दीन्हों गंध उदार।
पुनि बहुत भांति सेवारि कै, लाइ आरति थार,
करन लगी शुचि आरती, भरि भरि मोद अपार।

आरती-

कुअंर वर की आरती मनहारी,
श्री लक्ष्मीनीधि कुअंर सलोने।
दमकत गोर मुखाम्बुज सोने।
मिथिला धाम बिहारी, कुंअर वर...............
सीय बंधु रस रूप सुहाये, प्रेममूर्ति आनन्द रस छाये,
छहरत छटा अपारी ....कुंअर.........................
राम श्याल अहलाद स्वरूपा, प्रेम ज्ञान वैराग्य सुभूपा
जय जन मन सुखकारी, कुंअर.........................
कीजै, कृपा चरण रज पाऊं, मिथिला की तृण कीट कहाऊं
अतिशय सह्यों खभारी, कुंअर..................

दोहा-

करि आरती अनेक विधि, गिरी चरण मंह जाय,
पै भइया लखि तुरतहिं, लीन्हों गोद बिठाय।
अली लगी तब गावन गाना,
भ्रातृ प्रेम को पावन बाना।

गीत-

अस भइया के प्रेम हमारे।
सखि प्रमुदित अवलोकि मोहिं वे जग सुधि रहत बिसारे।
भोजन कबहुं न करत मोहिं बिनु रहत सदा अंकहि में धारे,
लल्ला लल्ला रटत निरन्तर जियत मनहुँ मम नाम सहारे।
निरखि मोहिं भरि जात मोद महं अक्षत जबहिं महल के द्वारे,
कबहूं हिडोल झुलावन सुख भरि बहन लगत तबहीं दृग तारे।
कबहुं कहानी रूचिर सुनावत, कबहुँ भाव महं भरत अपारे,
राज काज सों छूटि बेगहीं, आवत प्रथमहिं पास हमारे।
लहूं कोटिहूं जन्म ऋणी तऊ करि न सकौ मैं प्रेम तुम्हारे,
दास किशोर बसहु निशिवासर मम उर में मेरे दृग तारे।

समाजी-

भगिनी सों बंधवाई इति, रक्षाबंधन भ्रात।

श्री लक्ष्मीनीधि-

कहो मांगिलो लाड़िली, जो कुछ तुम्हहिं सुहात।
मैं अरू मेरो लाड़िली, यद्यपि सबहीं तुम्हार,
तदपि लगत कछु मांग लो, इच्छित रूचि अनुहार।

समाजी-

श्री लक्ष्मीनीधि बंधु के, सुनि सनेह मय बैन,
बोली रसभरि लाड़िली, सकुचत नत करि नैन।

श्री किशोरीजी-

नहिं दीन्हों कहा कब बंधु हमें,

कब पूरि कियो नहीं आस हमारी।
लहि आयसु राउर मांगत हों,
बस कोर कृपा की सदैव तुम्हारी।
जन्मनि जन्मनि बंधु रहो,
हमहुं भगिनी तब होंय तुम्हारी।
बस आस यही अभिलाष यही,
तुम हो हमरे हम होयं तुम्हारी।

गीत–

नहिं दिखात कछु वस्तु जगत में, जेहिं कर होय दुराव,
पाय तुम्हहिं निज भाग्य सराहें, उर आनंद अधिकाव।
मांगति हो बस कृपा कोर तब, नहिं कछु कहों बनाव,
दास किशोर, रहो नित तब तंग, भरि भरि विपुल उराव।

गीत–

मेरे भइया परम अभिराम, मेरे धन धाम,
मैं तुमसे क्या मांगू।
नहिं त्रिभुवन कछु परत दिखाई,
भइया की जो कर समताई।
मणि मणि धन रतन सुहाये,
सब मोहे माटी तुल्य लखाये।
मेरे भइया सुलक्ष्मीधाम, सुहावन नाम – मैं तुमसे ....
कौन वस्तु जग केर सुहाई, भइया जो तुमसों नही पाई,
जो कछु कबहुँ आप ते पाई, धन की धन सो भई सुहाई।
हम भई पूरण काम, पूर्ण विश्राम, मैं तुमसे ....

है विनती मम बंधु उदारा, लहैं नित्य हम राउर प्यारा,
पावैं नित तब क्रोड़ बिहारा, यह घनश्याम यहै सतकारा।
नित रहहि मिथिला धाम, यहे मन काम, तुमसे.....

समाजी–

ऐसे बहुविधि प्रेम की, करि करि सुन्दर बात,
मये विभोर किशोर लखि, भेंटत भगिनि भ्रात।

पद–

मिलनि भगनि भाई की प्यारी,
धनि धनि प्रीति रीति सुखदाई, सुनत लखत मन होत सुखारी।
रहे परस्पर प्रीति मुबारक, शोक निवारक भव भय हारी,
रक्षा बंधन बांधन की छबि, वरणत कविगणन की मतिहारी।
जय जय भगिनी, भ्रात की संतत सुमन बरसि सुर कहत उचारी।
रक्षा बंधन प्रेम बंधन हो, जुग जुग प्रीति टरे जन टारी।

रक्षाबन्धनाष्टक

(1)

यह पावन पर्व प्रकाश भरा, रस जीवन में सरसाता रहे,
अनुराग के दुग्ध सरोवर में मिथिलापुर नित्य नहाता रहे।
रक्षा का मनोहर सूत्र अहो, प्रति वर्ष करों मैं सुहाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(2)

भगिनी जन का ससमाज यही मिथिला का सुभाग बढ़ाता रहे,
अपने कमनीय कराम्बुजों से, सदा कंचन धार सजाता रहे।
भइया भइया अनुराग रंगा, श्रवणों को सुशब्द सुनाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(3)

सखि वृन्द समावृत श्री सिय का, मुखचन्द सुधा बरसाता रहे,
अवलोकते भ्रात जनों का हिया, नित ही नव जीवन पाता रहे।
सिय हो भगिनी हम भ्रात सदा, विधि से करजोर मनाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(4)

नव व्यंजन थार उमंग भरा, सिय का कर कंज सजाता रहे,
सखिवृन्द समेत महारस से, नित भ्रात जनों को खिलाता रहे।
इन बंधुओं के दृगका हर कोर, सुमौक्तिक राशि लुटाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(5)

मणि गुम्फित स्वर्णिम राखीयों का, सुप्रकाश सदैव ही छाता रहे,
सियसी भगिनी के करों से सुबद्ध अखण्डता दिव्य दिखाता रहे।
मणिबन्ध भरा हुआ राखीयों से अनुराग के चुम्बन पाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(6)

नव कंचन थार में आरती ले, सभी आर्तता दूर भगाता रहे,
अलि यूथ सदैव यहीं, नव मंगल यों ही मनाता रहे।
हुलसाता रहे पुलकाता रहे, अनुराग की गंग नहाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(7)

युवराज के अंक में श्री सिय का, नव विग्रह योंही सुहाता रहे,
हुलसाता रहे पुलकाता रहे मधुरे स्वर गीत सुनाता रहे।
इस भाग्य पै मैथिल बालकों के, सुरवृन्द सदैव सिहाता रहे,
यह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

(8)

रक्षा का सुहावन सूत्र यही, बना प्रीति का बंधन आता रहे,
किसी योनि में कर्म भ्रमाते रहें मिथिला का सुवास सुहाता रहे।
जग रूठा रहे परवाह नहीं, यही सूत्र सुमंगल दाता रहे,
ह आश किशोर न टूटे कभी, भगिनी अरू भ्रात का नाता रहे।

आराधना

''आराधना'

जन्म जो दीजै तो मिथिला सुदेश मध्य,
दीजै जो प्रवास राजधानी जनकचंद को।
सरस सतं पाहन पशु कीजै तो जनकपुर ठाम,
मच्छ कमठ कीजे तो कमला सरिबृन्द को।
लता पता खग मृग पुष्प कीजै तो सोई ही बाग,
जहाँ सियराम दृग मिलन मलिंद को।
किन्तु नर कीजै तो कुमार निमिवंश कुल,
अनुज सिय प्यारी को सुसार रामचन्द्र को।

अंतिम आरती (भ्रात भंगिनी)

सुन्दर झांकी झांकि के जीवन फल ली जै।
मिथिलाधिपनन्दनी नंद की आरती कीजै।।
भ्रात भगिनी ले अंक में, बहुविधि दुलरावें।
निरखि मुख भरि भाव में अतिशय सुख पावें।।
नयनन फल गुनि हर्षि के, पुलकित रस छाये।
आत्मा आश्रय जानि के चूमत पदभाये।।
छत्र चमर सिर ढारहीं, ललनागण लोनी।
भ्रात भगिनि जय बोलहीं, आनंद उर बोनी।।

नृत्यगान तें सेइके, मानहिं बडभागा।
वर्षि पुष्प बढ़ सिद्धि के हर्षण अनुरागा।।

रसाचार्य की आरती

कुंअर वर की आरती मनुहारी,
श्री लक्ष्मीनीधि कुंअर सलोने, गौर, गात छवि दमकत सोने
भये न हैं कबहूं न होने, एसे प्रेम पुजारी। कुंअर ....
जन्मत ते तिलकांकित भाला, रामायुध भुज सोह विशाला,
परम भागवत रघुवर श्याला, मिथिला राज बिहारी। कुंअर.......
राम प्रेम अहलाद स्वरूपा, योग ज्ञान वैराग्य सूभूपा,
चन्द्रकीर्ति सुख धाम अनूपा, निमिकुल मंडन कारी। कुंअर ....
आदि शक्ति अग्रज सुखकारी, दुलरावत नित जनक दुलारी,
होत सदा तिन पर बलिहारी, सरसावत रसधारी। कुँअर ....

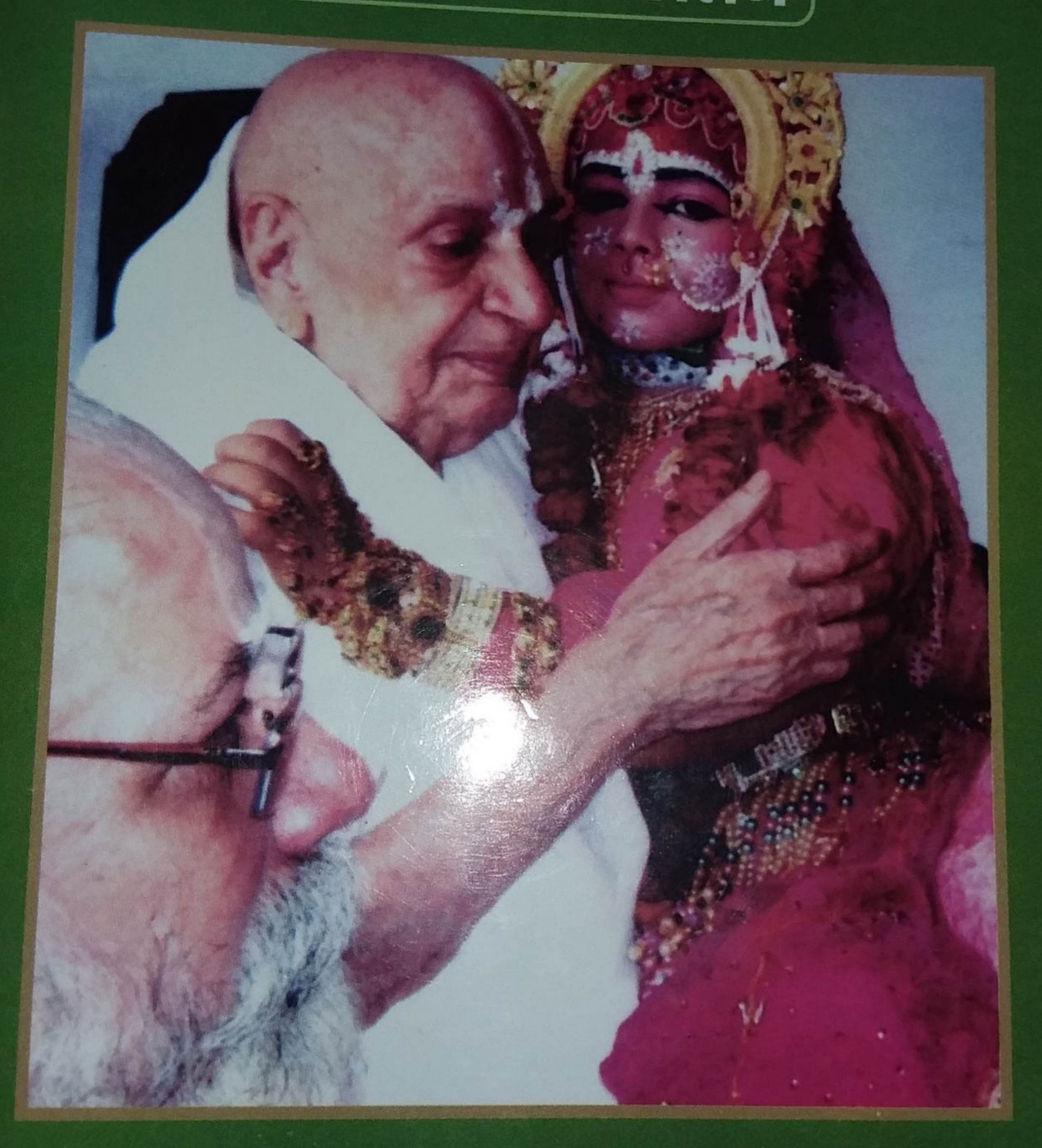
श्री लक्ष्मी नीधि स्तुति

सुभगं गोर वपुषं सुकुमारं प्रेमाधारं राजकुमारम्।
अति मति मानं शील निधानं पुलिकित गातं रसिक वरम्।
रामश्यालकं घृत सुभालकं नीलाम्बर धर केलिकरम्।
प्रेमवर्षणं ताप कर्षणं रामहर्षणं रूपनिधिम्।
रस अवतारं नित्य कुमारं श्री लक्ष्मी निधी भाव विधिम्।

श्री सद्गुरू प्रसन्न

श्री स्वामी रामहर्षण दास
जी महाराज

रक्षा बन्धन मिलन



सियाजू को दुलारते
श्री स्वामी रामहर्षण दास जी महाराज